

शाश्वत सुख का मार्गदर्शक मासिकपत्र

# आत्मधर्म

卐 : संपादक : रामजी माणेकचंद दोशी वकील 卐

सितम्बर : १९५९

☆ वर्ष पन्द्रहवाँ, भाद्रपद, वीर नि०सं० २४८५ ☆

अंक : ५

## साधक संतों की दशा

अहा, आत्मशक्ति के साधक संतों की दशा अद्भुत होती है ! साधक ज्ञानी अपनी अनंत चैतन्यशक्ति का सम्राट है; उसे जगत की परवाह नहीं है; क्योंकि जगत के पास से उसे कुछ लेना नहीं है। भगवान के दास... और जगत से उदास... ऐसे सम्यक्त्वी संत सदैव सुखी हैं... अंतरलक्ष से अपने आत्मिक आनन्द का अनुभव करते हैं। अतीन्द्रिय ज्ञान-आनन्दरूप से परिणमित होता हुआ साधक सज्जधज कर केवलज्ञान प्राप्त करने के लिये चला जाता है...

साधक संतों की ऐसी दशा का अनुमान बाह्य से नहीं हो सकता... उसकी यथार्थ प्रतीति में भी अपूर्व आत्मार्थिता है।

वार्षिक मूल्य  
तीन रुपये

[ १७३ ]

एक अंक  
चार आना

श्री दि० जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़ ( सौराष्ट्र )



सस्ते में मिलेगा  
श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव कृत  
**पंचास्तिकाय संग्रह**  
यानी  
**पंचास्तिकाय शास्त्र**

इसका अक्षरशः ठीक रूप में अनुवाद प्रथम बार ही हुआ है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों को एकत्र करके पाँच साल तक उत्तम परिश्रम द्वारा-आचार्यवर श्री अमृतचन्द्र की टीका का अक्षरशः अनुवाद तैयार हुआ है, जो सर्व प्रकार उत्तम और संशोधित व संस्कृत टीका सहित है, टीका के नीचे कठिन विषयों पर अच्छा प्रकाश डालनेवाला विस्तृत फुटनोट भी दिया है, बढ़िया कागज सुन्दर छपाई और मजबूत सुन्दर बाइंडिंग सहित सर्व प्रकार से मनोज्ञ और महान ग्रंथ होने पर भी मूल्य ४-५० है। पोस्टेजादि अलग (पृ० सं० ३१५) थोक लेने पर कमीशन २५) से० देंगे।

मिलने का पता—  
श्री दि० जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट  
सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

[ जैन-जैनेतर समाज में अवश्य प्रचार में लाने योग्य यह उत्तम साहित्य है। ]

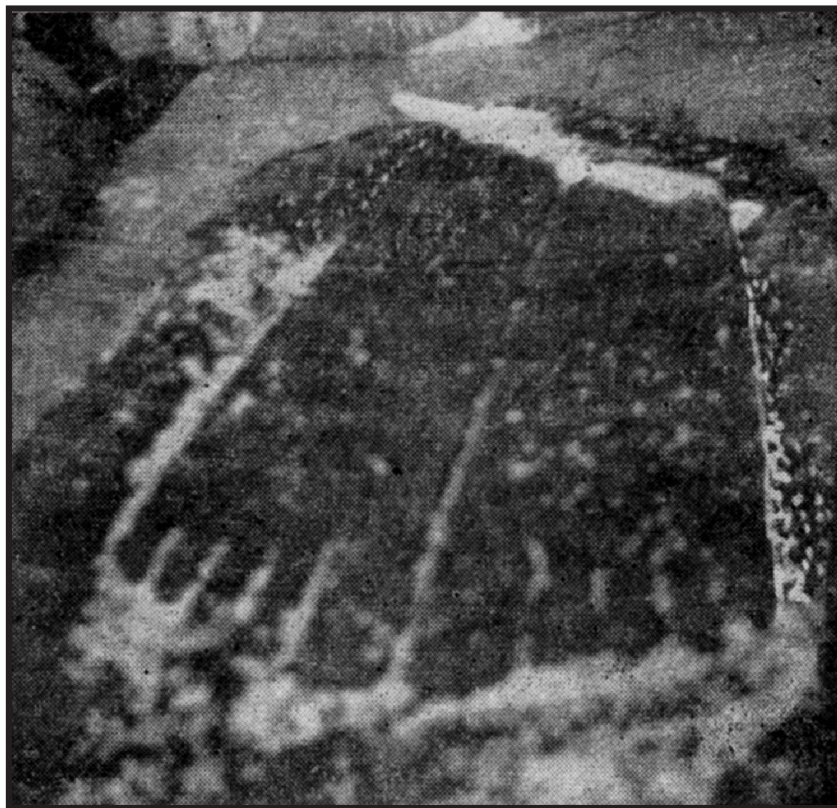


# आत्मधर्म

✧ : संपादक : रामजी माणेकचंद दोशी वकील ✧

सितम्बर : १९५९ ☆ वर्ष पन्द्रहवाँ, भाद्रपद, वीर नि०सं० २४८५ ☆ अंक : ५

आती है हृदय में तीर्थों की याद जो.....



श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव के चरण कमल  
वे गुरु चरण जहाँ धरे.... जग में तीरथ तेह.....  
सो रज मम मस्तक चढ़ो.... सेवक मांगे एइ.....





खड़ा बाहुबलि बता रहा, भय करो न आँधी पानी से,  
बढ़े चलो तुम अपने पथ पर, झुको न बन सेनानी से,  
आत्म-साधना में जितने भी बड़े-बड़े संकट आये,  
उन सभी से लड़ा बाहुबलि, खड़ा सभी को समझावे ॥



\*\*\*\*\*

गुरुदेव कहते हैं—यात्रा में अनेक तीर्थों के दर्शन किये; किन्तु बाहुबलि स्वामी (गोमटेश्वर) की जीवन्त मुद्रा तो अद्भुत है !.... उसके अंग-अंग से मानों पुण्य और पवित्रता झर रहे हैं !... नेत्र ऐसे झुके हैं जैसे पवित्रता का पिण्ड बनकर अक्रिय ज्ञानानन्द का ध्यान धर रहे हों;—इसप्रकार उनकी भाववाही मुद्रा देखते ही बनती है;... उसे देख-देखकर तृप्ति नहीं होती.... आज इस दुनियाँ में वह अद्वितीय है।

[ - यात्रा के पश्चात् सोनगढ़ के पहले प्रवचन से ]

\*\*\*\*\*

## सुवर्णपुरी समाचार

श्रावण मास में यहाँ जैनधर्म शिक्षण वर्ग में लाभ लेने के लिये उत्तर भारत से ( -देहली, भोपाल, बरुआसागर, कोटा, उदयपुर, सेमारी, गुना, अशोकनगर, बुलंदशहर, ललितपुर तथा उनके समीप के गाँव से) करीब ११० तत्त्व जिज्ञासु आये हैं तथा गुजरात से करीब ४० भाई कलोल, तलोद, फतेपुर, रखीआल, बड़ोदा, खेडादि गाँव तथा दक्षिण में मुंबई घोडनदी आदि गाँव से ये सब भाइयों ने बड़े चाव से, उत्साह पूर्वक शास्त्र अभ्यास में यथायोग्य लगन लगाकर (सत्पुरुष कानजी स्वामी का प्रवचन, तत्त्वचर्चा तथा जिन मंदिर में पूजा-भक्ति तथा शिक्षण वर्ग में) अच्छी तरह लाभ रहे हैं। उत्तम वर्ग में—मोक्षमार्गप्रकाशक का नौवाँ अध्याय चलता है 'मोक्ष साधन में पुरुषार्थ की मुख्यता' वाले प्रकरण में स्वभाव, पुरुषार्थ, काललब्धि और कर्म का उपशमादि तथा सर्वज्ञता के निर्णय में सच्चा पुरुषार्थ, इन्हीं सब बातों को स्पष्ट रूप से समझाते हैं।

\*\*\*\*\*

## यात्रा समाचार

### शाहपुर ( चैत्र शुक्ला अष्टमी )

प्रातः काल जिनेन्द्रदेव के दर्शन करके यात्रासंघ ने कुण्डलपुर से प्रस्थान किया... मार्ग में वाँसा ग्राम के जैनसमाज ने गुरुदेव का स्वागत किया और संघ को जलपान के लिये रोका... वहाँ जिनमन्दिर के दर्शन करके संघ ने आगे प्रस्थान किया। सागर की ओर जाते समय बीच में शाहपुर जाने के लिये सात मील दूसरे मार्ग पर जाना होता है। वहाँ मोटर बसों के योग्य मार्ग नहीं था; फिर भी शाहपुर संघ के विशेष आग्रह से वहाँ का कार्यक्रम रखा था। शाहपुर के समाज ने ४० मजदूर लगाकर रातोंरात रास्ता सुधराया था। उनका कहना था कि मोटर नहीं चलेगी तो एक-एक यात्री को कंधे पर बैठाकर ले जायेंगे; लेकिन संघ को शाहपुर तो चलना ही होगा। सागर के मार्ग पर शाहपुर जाने के लिये वाहन की प्रतीक्षा करते हुए दो-तीन घण्टे तक मैदान में बैठना पड़ा और एक बजे शाहपुर पहुँचे। शाहपुर समाज ने अत्यन्त उल्लास पूर्वक पूज्य गुरुदेव का तथा संघ का भव्य स्वागत किया था... नगर को द्वारों तथा तोरणों से सजाया था... उनका उत्साह देखकर यात्रीगण मार्ग की यकावट को भूल गये थे... भोजन के पश्चात् जिनमन्दिर में भजन तथा भक्ति का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मन्दिर खचाखच भर गया था। पूज्य बेन श्री बेन ने —‘मैं जीवन दुख सब भूल गया, ’—इत्यादि भजनों द्वारा भावपूर्ण भक्ति कराई थी। प्रवचन के पश्चात् धर्मप्रेमी जनता ने गुरुदेव के प्रति अभिनन्दनों की झड़ी लगा दी थी। कई लोग काव्य गाने चाहते थे—समय नहीं था—तो भी अनेक भक्तों ने कविता द्वारा गुरुदेव का अभिनन्दन किया था। शाहपुर जैन समाज की ओर से दो अभिनन्दन पत्र भी अर्पित किये गये थे।—इसप्रकार शाहपुर की जनता ने हृदय खोलकर गुरुदेव का संघ सहित स्वागत किया था।

सायंकाल भोजन के पश्चात् सात मील लम्बा रास्ता पार करके पक्की सड़क पर आये और वहाँ से चलकर रात्रि को आठ बजे सागर पहुँचे।

### सागर ( चैत्र शुक्ला ९-१० )

प्रातःकाल दर्शन-पूजन करके यात्रीगण गुरुदेव का स्वागत करने गये। सागर शहर को



भलीभाँति सजाया गया था। गल्ला बाजार के विशाल चौक में मानव-समुदाय उमड़ पड़ा था। गल्ला बाजार के व्यापारी (सिर्फ जैन ही नहीं किन्तु अजैन भी) दो दिन से गुरुदेव के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। आते समय करीब आठ हजार की संख्या में जनता-गुरुदेव का स्वागत करने के लिये उत्सुक हो रही थी। भारी उत्साह से जयकार और हल्ला से गल्ला बाजार का विशाल चौक देखनेयोग्य था।

गुरुदेव सवेरे आठ बजे शाहपुर से सागर पधारे और जनता ने उल्लासपूर्वक भव्य स्वागत किया। श्री सम्मेदशिखरजी यात्रा के समय इन्दौर नगर का स्वागत जैसा महान था, वैसा ही इस यात्रा में सागर का स्वागत था। गुरुदेव का आगमन होते ही बेण्ड बाजों का स्वर गूँज उठा और स्वयंसेवकों ने सलामी देकर स्वागत किया। हजारों जनता के जय-जयकार से आकाश गूँज उठा था। स्वागत-मंडप में अनेक विद्वानों ने पुष्प-मालाओं द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करके गुरुदेव का स्वागत किया। पंडित मुत्रालालजी समगोरया ने सागर जनता की ओर से स्वागत भाषण किया था। संघ के समस्त यात्रियों का भी पुष्पहार तथा कुंकुम तिलक द्वारा वात्सल्यपूर्वक सम्मान किया गया था। सागर के अनेक विद्वान सभा में उपस्थित थे। गुरुदेव ने मंगल-प्रवचन करते हुए कहा था—आत्मा शान्ति का सागर है; उसकी श्रद्धा-ज्ञान-रमणतारूप धर्म, सो उत्कृष्ट मंगल है। इसप्रकार गुरुदेव ने सागर में शान्ति का सागर बतलाया था।

मंगल-प्रवचन के पश्चात् स्वागत-यात्रा का जुलूस प्रारम्भ हुआ और वर्णी भवन पहुँच कर उसकी समाप्ति हुई। जैन व्यापारियों ने दो दिन तक अपनी दुकानें बन्द रखी थीं। सागर के जैन समाज ने संघ की शानदार व्यवस्था की थी। सेठ भगवानदासजी आदि ने संघ को भोजन के हेतु बुलाया था। और भोजन के समय वात्सल्य प्रदर्शित करने के लिये कुंकुम तिलक किया था।

वर्णी भवन में दो जिनालय तथा मानस्तंभ हैं। मानस्तंभ के ऊपर पहुँचने के लिये सीढ़ियों की व्यवस्था है। दोपहर को प्रवचन के समय वर्णीभवन श्रोताओं से खचाखच भर गया था। सभा में दस हजार श्रोता तथा अनेक त्यागी-ब्रह्मचारी, विद्वान-पण्डित और प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे।

गुरुदेव का आध्यात्मिक प्रवचन समाप्त होने पर पं० मुत्रालालजी ने प्रवचन की प्रशंसा करते हुए कहा था कि—स्वामीजी का प्रवचन अनोखा है। ऐसा शुद्ध प्रवचन-जो मात्र आत्मतत्त्व का निरूपण करता हो-मैंने आज ही सुना। अगर इसका ध्यान से श्रवण-मनन किया जाये तो आत्मा का अवश्य कल्याण हो सकता है। यहाँ मैं बारह वर्ष से रहता हूँ; मैंने बहुत से नेताओं तथा



सागर में पू० गुरुदेव शांति का सागर बताते हुए।

\*\*\*\*\*

पंडितों के भाषण सुने हैं; मैं भी पंडित कहलाता हूँ। मैं अपनी बात कह रहा हूँ कि जब मैंने पूज्य स्वामीजी का साहित्य पढ़ा, तब मुझे मालूम हुआ कि पुण्य अलग वस्तु है और धर्म अलग है। बीच में पुण्य आता है किन्तु वह ध्येय नहीं है... धर्म उससे अलग है। बड़े सौभाग्य की बात है कि हमें दो दिन के लिये पूज्य स्वामीजी का सत्समागम प्राप्त हुआ है; यदि हमने उसका लाभ लिया तो हमारा अवश्य कल्याण होगा।

सायंकाल गुरुदेव के साथ यात्रियों ने जिनमन्दिरों की वन्दना की और रात्रि को अभिनन्दन समारोह में गुरुदेव को तीन अभिनन्दन-पत्र अर्पित किये गये। उनमें एक दि० जैन समाज की ओर से, दूसरा सागर के वर्णी विद्यालय की ओर से तथा तीसरा महिला आश्रम की ओर से दिया गया था।

दूसरे दिन प्रातः काल चौधरनबाई वाले मंदिर में समूह पूजन हुई थी। उस विशाल मन्दिर में अनेक वेदियाँ हैं तथा आठ-दस फीट ऊँची छह खड्गासन प्राचीन जिन प्रतिमाएं विराजमान हैं।



उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे चैतन्यध्यान में मग्न मुनिवर श्रेणी लगाकर अरिहन्तपद प्रगट करते हों ! उस भव्य मन्दिर में आदिनाथ प्रभु की, चौबीस भगवन्तों की तथा सीमन्धरादि बीस भगवन्तों की समूह पूजन करते हुए यात्रियों को महान् हर्ष हो रहा था। सबेरे प्रवचन के बाद जिनमन्दिरों की वन्दना करने गये। सागर के प्रतिष्ठित सेठ भगवानदासजी गुरुदेव के साथ रहकर प्रत्येक मन्दिर दिखला रहे थे। ऊँचे शिखरों से शोभायमान दस जिनमन्दिरों की वन्दना की थी।

उस दिन गुजराती सेठ श्री लल्लूभाई ने संघ को भोजन के हेतु आमंत्रित किया था। भोजन के पश्चात् प्रत्येक यात्री का पुष्पहार से स्वागत किया था। पन्द्रह सौ व्यक्तियों को भोजन कराने के उपरान्त गुरुदेव के आगमन की खुशी में ५००) वर्णी विद्यालय को; ४०४) पूज्य बेन श्री बेन के फंड में तथा ३००) ब्रह्मचारी बहिनों-भाइयों को भेंटस्वरूप दिये थे। गुरुदेव के प्रति एक अजैन भाई का भक्तिभाव देखकर सागर की जनता अत्यन्त प्रभावित हुई थी।

दोपहर को प्रवचन के बाद मंडप में पूज्य बेन श्री बेन ने भक्ति कराई थी। रात्रि को आगम और अध्यात्म की शैली के सम्बन्ध में सुन्दर तत्त्वचर्चा हुई थी। उस समय सागर के वयोवृद्ध सेठ श्रीमान् कुन्दनमलजी सिंघई ( जो वर्णीजी के बड़े भाई कहलाते हैं और सागर के प्रतिष्ठित नागरिक हैं ) अत्यन्त भावपूर्वक गुरुदेव के दर्शन करने आये थे। आभारदर्शन के समय पं० मुन्नालालजी ने कहा था कि मैं बारह वर्ष से सागर में रहता हूँ, लेकिन ऐसा स्वागत मैंने आजतक किसी सन्त का नहीं देखा। स्वामीजी की प्रवचन शैली अद्भुत है... भक्ति-पूजन का कार्यक्रम देखकर मेरा हृदय गद्गद् हो गया है।

इसप्रकार सागर का दो दिन का कार्यक्रम सानन्द समाप्त हुआ। वहाँ के उत्साही समाज ने बड़ी रुचि पूर्वक प्रत्येक कार्य में भाग लिया था। मध्यप्रदेश में जबलपुर और सागर दोनों नगर जैनधर्म की प्रभावना के लिये प्रसिद्ध हैं। दोनों नगरों में जैनियों की जनसंख्या करीब आठ-दस हजार है और वहाँ धार्मिक उत्सव बड़े उल्लासपूर्वक मनाये जाते हैं।

### नैनागिरि-रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्र ( चैत्र शुक्ला ११ )

सागर से विदा होकर गुरुदेव ने संघसहित नैनागिरि की ओर प्रस्थान किया। अब मध्यप्रदेश में विदर्भ की यात्रा प्रारम्भ हो रही थी। उन दिनों वहाँ डाकुओं का भय होने से संघ के साथ पुलिस-पार्टी का इन्तजाम किया गया था।

सागर से नैनागिरि की ओर जाते समय मार्ग में बंड़ा ग्राम आता है; वहाँ के समाज ने गुरुदेव

का स्वागत किया था और संघ के जलपान की व्यवस्था की थी। मार्ग के अन्य ग्रामों में भी गुरुदेव का सन्मान हुआ था।

करीब ८ बजे संघ नैनागिरि पहुँच गया था। वहाँ आमने-सामने दो पहाड़ियाँ हैं। नैनागिरि-धर्मशाला में १३ और रेशंदीगिरि पर्वत पर ३६ जिनालय हैं। उपरान्त, दोनों पहाड़ियों के बीच कमलों से आच्छादित सुन्दर सरोवर है और सरोवर के मध्य में एक जलमन्दिर है। इसप्रकार वह सिद्धक्षेत्र पचास जिनमन्दिरों से शोभायमान है। श्री वरदत्त आदि अनेक मुनियों ने वहाँ से मोक्ष प्राप्त किया है।

रेशंदीगिरि की चढ़ाई बिल्कुल आसान है। पर्वत पर पहुँचने के लिये करीब सौ सीढ़ियाँ हैं। पर्वत के मुख्य मन्दिर में पार्श्वनाथ भगवान की गुलाबी रंग की १०-११ फीट ऊँची महा मनोज्ञ प्रतिमा है। आस-पास चौबीसी के कारण दृश्य विशेष सुन्दर बन जाता है। उपरान्त, तीन फुट ऊँचे बाहुबलि भगवान तथा वरदत्त मुनिराज की भव्य प्रतिमा भी अपनी वीतरागी मुद्रा द्वारा भक्तों के हृदय को आकर्षित करती हैं। एक स्थान पर वरदत्तादि मुनिवरों के चरण कमल हैं। कुछ मन्दिरों में अत्यन्त प्राचीन कलात्मक प्रतिमाएं विराजमान हैं। मन्दिरों की वन्दना के पश्चात् पार्श्वनाथ भगवान के सन्मुख रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्र की तथा सिद्ध भगवान की पूजा हुई थी। तत्पश्चात् पूज्य बेनश्री बने ने निम्नोक्त उल्लासपूर्ण भक्ति भी कराई थी—

**“आओ आओ जी... हाँ हाँ... आओ आओ जी...**

**जैन जग सारे, वरदत्त मुनि मोक्ष गये...”**

—इसप्रकार नैनागिरि-रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्र की यात्रा पूरी हुई।

दोपहर को प्रवचन से पहले स्वागत-समारोह हुआ था। बालकों ने स्वागत-गान गाया और क्षेत्र के मंत्रीजी ने भाषण देते हुए कहा—आज हमारे लिये बड़े हर्ष का दिन है कि पूज्य श्री कानजी स्वामी संघसहित यहाँ पधारे हैं। यह वही पुण्य भूमि है जहाँ वरदत्तादि मुनिवरों ने आत्म-साधना की थी.... आज इस क्षेत्र पर स्वामीजी को देखकर हमें महान हर्ष हो रहा है। श्री कानजीस्वामी सिर्फ सोनगढ़ की ही नहीं, सारे भारत की अमूल्य निधि हैं; आपने भारत में अध्यात्म की गंगा प्रवाहित की है। हम स्वामीजी का शत शत अभिनन्दन करते हैं।

मंत्रीजी के पश्चात् क्षेत्र के सभापति का भाषण हुआ और फिर “तीर्थराज की पुण्य धरा पर स्वामीजी आज पधारे...” इस गीत के पश्चात् गुरुदेव का प्रवचन हुआ... आसपास के ग्रामों से



सैकड़ों आदमी गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे। प्रवचन के समय बादल होने से वातावरण उपशांत लग रहा था और प्रवचन समाप्त होने से दस मिनट पूर्व हलकी-सी वर्षा हुई थी—मानों तीर्थक्षेत्र पर गंधोदक वृष्टि करके आकाश उसकी पूजा कर रहा हो! वर्षा के बीच ही अभिनन्दन तथा आभार दर्शन की विधि पूरी हुई। नैनागिरि से द्रोणगिरि की ओर प्रस्थान का दृश्य भी दर्शनीय था। संघ की मोटर बसें और कारें एक पंक्ति में चल रही थीं। मार्ग पर पानी का छिड़काव था; मेघाच्छादित आकाश धरती पर शांति की छाया फैला रहा था। एक ओर मन्दिरों से सुशोभित तीर्थधाम दृष्टिगोचर होता था और पास ही कमल पत्रों से आच्छादित सरोवर लहराता था। उस रमणीय दृश्य के साथ भक्तों के हृदय में यात्रा की उमंग बढ़ रही थी। सबसे आगे गुरुदेव की मोटर 'मंगल-वर्द्धिनी', उसके पीछे पुलिस की जीप, फिर बेन श्री बेन की मोटर 'सत् सेविनी', श्री महेन्द्रकुमार सेठी की 'अमर-किरण' और उनके पीछे चार यात्री बसें चल रही थीं—इसप्रकार संघ विदर्भदेश में विचर रहा था। गुरुदेव के साथ एक सिद्धिधाम से दूसरे सिद्धिधाम की यात्रा करते हुए भक्तों के हर्ष का पार न था।

नैनागिरि से द्रोणगिरि की ओर प्रस्थान करते हुए मार्ग में दलपतपुर ग्राम आता है; वहाँ के समाज ने पूज्य गुरुदेव का स्वागत किया था और यात्रियों को दूध का शर्बत पिलाया था.. आगे बढ़ने पर फिर एक ग्राम में गुरुदेव का स्वागत हुआ और संघ को भी शर्बत के साथ पुष्प मालाएँ पहिनाई गईं। शाम को मलहरा ग्राम में गुरुदेव का भव्य स्वागत हुआ था.... सिर्फ १० मिनट के समय में वहाँ के समाज ने गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र अर्पित किया था। समयाभाव के कारण यात्रियों ने बस में बैठे-बैठे ही सायंकालीन अल्पाहार कर लिया और रात्रि होने से पूर्व ही द्रोणगिरि सिद्धिधाम पहुँच गये।

### द्रोणगिरि सिद्धिधाम की यात्रा ( चैत्र शुक्ला १२ )

प्रातःकाल पाँच बजे गुरुदेव ने भक्तों सहित गुरुदत्त मुनिराज के मोक्षधाम की यात्रा के लिये प्रस्थान किया। पर्वत सुन्दर है; चढ़ाई भी आसान है... करीब १० मिनट में पहाड़ के ऊपर पहुँचे और मन्दिरों की वन्दना प्रारम्भ हुई... थोड़ी-थोड़ी दूर पर २६ जिनालय हैं, उनकी वन्दना करके अन्तिम जिनालय में आये। वहाँ प्राचीन गहरी गुफा है; वही गुरुदत्त मुनि का मोक्षधाम कहा जाता है... उसी के पास एक मन्दिर है जिसमें अनेक प्रतिमाएँ तथा मुनिवरों के चरण हैं; बीच में बड़ी वेदी पर मुनिवरों के भाववाही दृश्य हैं। उसी गुफा और मन्दिर के सामने विशाल आँगन में पूजा-

भक्ति हुई थी। प्रथम द्रोणगिरि सिद्धिक्षेत्र की और सिद्ध भगवन्तों की पूजा इतने भक्तिभाव पूर्वक हुई थी मानों सिद्ध भगवान साक्षात् सन्मुख विराजमान हों। पूजन के पश्चात् गुरुदेव ने भक्ति कराई थी—

“ धन्य मुनीश्वर आतमहित में छोड़ दिया परिवार...

कि तुमने छोड़ा सब घरबार...

धन छोड़ा, वैभव सब छोड़ा.....

समझा जगत असार...

कि तुमने छोड़ा सब संसार...”

तत्पश्चात् पूज्य बेनश्री बेन ने बड़े उल्लास भाव से निम्नोक्त भक्ति बुलवाई थी—

ऐसे गुरुदत्त मुनि देखे वन में

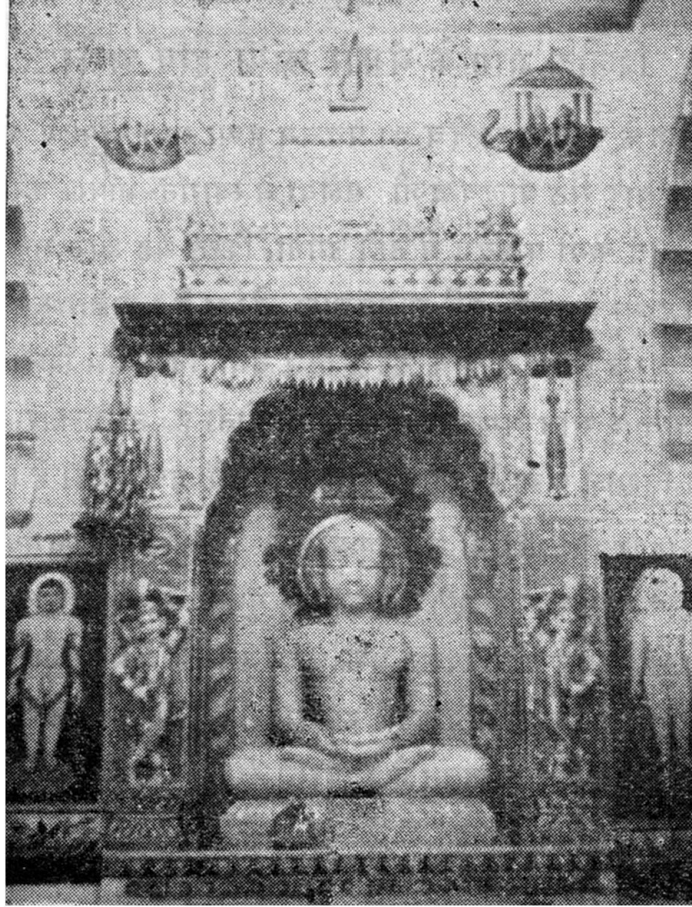
जाके रागद्वेष नहीं मन में...

उस समय ऐसा वातावरण था मानों साक्षात् मुनिवरों के दर्शन कर रहे हों! द्रोणगिरि तीर्थ दो नदियों के बीच स्थित है। पर्वत के निकट ही चन्द्रभागा नदी इसप्रकार कलकल ध्वनि करती बह रही है मानो मुनिवरों का गुणगान कर रही हो! पूजा-भक्ति के पश्चात् सबने गुफा देखी तथा तीर्थधाम के वातावरण का अवलोकन किया। इसप्रकार गुरुदेव के साथ आनन्द सहित सिद्धिधाम की यात्रा करके नीचे उतरे और द्रोणगिरि सिद्धिक्षेत्र की यात्रा समाप्त हुई।

सागरवाले सेठ बालचन्दजी मलैया ने द्रोणगिरि आकर संघ की व्यवस्था में रुचिपूर्वक भाग लिया था और संघ को भोजन कराया था। मलहरा के सज्जनों ने भी संघ की व्यवस्था में सम्पूर्ण सहयोग दिया था।

गुरुदेव के आगमन तथा महावीर जयन्ती के उपलक्ष में वहाँ पाँच दिन के लिये एक मेले का आयोजन किया गया था। बाहर के हजारों जैन यात्री आये थे और डेरा-तम्बुओं से मानों एक नये नगर की रचना हो गई थी। मेले के स्थान पर एक सुन्दर मण्डप में जिनेन्द्र भगवान की स्थापना की गई थी। रात्रि को वहाँ भक्ति का कार्यक्रम रखा गया था। पूज्य बेनश्री बेन ने वीर प्रभु के पालना-झूलन का सुन्दर स्तवन तथा गुरुदत्तादि मुनिवरों की स्तुति गवाई थी। सिद्धिक्षेत्र की पावन भूमि पर जिनेन्द्र भगवान के सन्मुख भक्ति करते हुए भक्तों को अपार हर्ष हो रहा था।





### मलकापुर के महावीर भगवान

पू० गुरुदेव के मंगल हस्त द्वारा प्रतिष्ठित १८८ जिनबिम्बों में से सबसे बड़ी प्रतिमा जिसके एक तरफ भरत और दूसरी तरफ बाहुबलि हैं।

\*\*\*\*\*

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन (महावीर भगवान का जन्म कल्याणक होने से) प्रातःकाल प्रभात फेरी के पश्चात् मंडप में समूह-पूजन हुई थी। पूजन के बाद भक्ति का कार्यक्रम था—

कुंडलपुरी में मंझार छाया हरष अपार....

भारत भूमि के मंझार छाया हरष अपार....

त्रिलोक भूमि के मंझार छाया हरष अपार....

भक्ति के पश्चात् गुरुदेव का प्रवचन हुआ था। दोपहर को गुरुदेव के प्रवचन के बाद सेठ बालचन्दजी मलैया ने स्वागत-भाषण करते हुए कहा था कि—सूर्य कभी पश्चिम में नहीं उगता; किन्तु यह ज्ञान सूर्य तो पश्चिम में उदित हुआ है और हमें ज्ञानप्रकाश दे रहा है। अज्ञानरूपी अन्धकार को नष्ट करके इसने रात्रि के बदले दिन बना दिया है। जिसप्रकार तीर्थकर भगवान के साथ गणधरादि की सभा होती है, उसीप्रकार स्वामीजी के साथ भी विशाल सभा है; यह सब देखकर हमें हर्ष हो रहा है।

छतरपुर निवासी श्री नरेन्द्रकुमारजी एम० ए० की धर्मपत्नी श्रीमती रमादेवी 'साहित्य रत्न' ने उल्लासपूर्वक भाषण करते हुए कहा —'स्वामीजी के संघ को देखकर मुझे चतुर्थ काल के समवसरण जैसे आनंद का अनुभव हो रहा है... यहाँ सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का चतुर्थ काल जैसा सुयोग उपस्थित हुआ है। स्वामीजी के प्रवचन में सम्यग्ज्ञान की धारा बहती है।

**आज चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन,  
द्रोणगिरि जैसा पावन सिद्धक्षेत्र, और  
पूज्य कानजी स्वामी जैसे ज्ञानी पुरुष!**

—ऐसे सुन्दर सुयोग आज यहाँ बन गया है। स्वामीजी की सभा में बैठे हुए हमें ऐसा अनुभव होता है जैसे महावीर भगवान के दरबार में बैठे हों! मुझे विश्वास है कि जैसी शान्ति सोनगढ़ की इन बहिनों को प्राप्त हुई है, वैसी हम सबको भी होगी।'

तत्पश्चात् पं० दयाचन्दजी ने श्रद्धांजलि-काव्य पढ़ा और पं० दुलीचन्दजी ने उस प्रान्त की ओर से दिया गया अभिनन्दन-पत्र पढ़कर सुनाया। फिर जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक हुआ था। कुछ यात्री सायंकाल पुनः सिद्धक्षेत्र की वन्दना के लिये पर्वत पर गये थे। रात्रि को तत्त्वचर्चा हुई थी।—इसप्रकार द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र का द्विदिवसीय कार्यक्रम सानन्द समाप्त हुआ।

**द्रोणगिरि सिद्धिधाम की यात्रा करानेवाले गुरुदेव को नमस्कार हो!**

**खजुराहा ( चैत्र शुक्ला १४ )**

द्रोणगिरि से प्रस्थान करके नौ बजे खजुराहा पहुँचे... वहाँ अनेक प्राचीन जिनमन्दिर तथा सैकड़ों प्राचीन जिनबिम्ब हैं। करीब अस्सी फुट ऊँचे शिखरवाले मन्दिर प्राचीन काल की कारीगरी से शोभायमान हैं। कहीं-कहीं पत्थरों की कटाई अधूरी रह गई है। मुख्य मन्दिर में शान्तिनाथ भगवान की पन्द्रह फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा पत्थर में कटी हुई है... अहा! उन शान्तिनाथ



भगवान को देखते ही आत्मिक शान्ति की भावना जागृत होती है। प्रतिमाजी संवत् १०८५ की हैं। मन्दिर के आँगन में चारों ओर अनेक जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। ३२ स्थानों के दर्शन करने के पश्चात् शान्तिनाथ भगवान के सन्मुख पूजन-भक्ति हुई थी।

मन्दिर के बाहर अनेक विशाल प्राचीन जिनबिम्बों के अवशेष हैं; वे प्राचीन अवशेष भी दि० जैन धर्म के प्राचीन वैभव की घोषणा करते हुए मुमुक्षु दर्शक के हृदय में वीतरागता की प्रेरणा जागृत करते हैं। एक ओर खंडित प्रतिमाओं को देखकर हृदय कुछ खेदखिन्न हो जाता है, तो दूसरी ओर जैनधर्म के भव्य प्राचीन वैभव का स्मरण होने से हृदय गौरवान्वित होकर वीतरागता की भावना में लीन हो जाता है। मन्दिरों के प्रवेश द्वार आदि की कला अत्यन्त आकर्षक है। कहीं भगवान की माता के सोलह स्वप्नों का दृश्य है, कहीं देवियाँ माता की सेवा कर रही हैं, तो कहीं पंचपरमेष्ठी भगवान की मूर्तियाँ अंकित हैं। शान्तिनाथ भगवान के सन्मुख अत्यन्त शान्त वातावरण है। ध्यानस्थ भगवान की उंगलियों की कला दर्शनीय है; हाथ में पद्मचिह्न अंकित हैं।

दोपहर को भोजन के पश्चात् म्यूजियम देखने गये थे, जहाँ सैकड़ों प्राचीन जिन प्रतिमाएँ हैं। अन्य मत के मन्दिरों की प्राचीन कला देखने के पश्चात् संघ ने वहाँ से प्रस्थान किया। खजुराहा १ से २ बजे तक गुरुदेव का प्रवचन भी हुआ था।

खजुराहा से पपौरा जाते समय मार्ग में नौगाँव आता है। वहाँ के समाज ने भव्य मंडप में गुरुदेव का स्वागत किया था और संघ को दूध की लस्सी पिलायी थी। टीकमगढ़ पहुँचने पर वहाँ के समाज ने गुरुदेव का स्वागत किया था। टीकमगढ़ के मन्दिरों की वन्दना करके रात्रि को पपौराजी क्षेत्र पहुँच गये थे।

### पपौराजी

पपौराजी सुन्दर क्षेत्र है। विशाल मैदान के चारों ओर धर्मशाला और ७५ मन्दिर हैं। पहले मन्दिर में आदिनाथ भगवान की छह फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा के दर्शन करते ही यात्रियों की थकावट दूर हो जाती है और हृदय आनन्द से भर जाता है। मन्दिर विशाल है तथा कुछ मंदिरों की आकृति गजरथ के समान है।

### पपौराजी अतिशय क्षेत्र के ७५ मंदिरों की वन्दना ( चैत्र शुक्ला १५ )

प्रातःकाल गुरुदेव ने संघसहित मंदिरों की वन्दना प्रारम्भ की। वहाँ पर्वत नहीं है किन्तु विशाल मैदान में ही अलग अलग ७५ मंदिर तथा तीन मानस्तम्भ हैं। कुछ तीन पीठिकाओं की

रचना युक्त समवसरण मंदिर भी हैं। मंगल-स्तुति गाते-गाते संकरे प्रवेश द्वारों में होकर क्रमशः ३७ मंदिरों की वन्दना पूरी की और ३८ वें मंदिर में आये। वहाँ भक्तों ने शीतल छाया में बैठकर थकान दूर की... और आगे के मंदिरों की वन्दना प्रारम्भ हुई।

४३ वें मंदिर के बाद ४४ से ६८ तक के मंदिर एक ही साथ हैं, जिसे चौबीसी कहते हैं। जन्देरी की चौबीसी देखकर एक भक्त ने यह चौबीसी बनवाई थी। उसमें विशेषता मात्र इतनी है कि प्रत्येक मन्दिर की अलग-अलग प्रदक्षिणा हो सकती है। पंक्तिबद्ध चौबीस वेदियों पर चौबीस भगवान विराजमान हैं, जिनमें अधिकांश प्रतिमाएं पार्श्वनाथ भगवान की हैं। चौबीसी के मध्य भाग में चन्द्रप्रभु भगवान का मन्दिर है जिसमें पाँच फुट ऊँची चन्द्रप्रभु भगवान की खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। ७५ मन्दिरों की वन्दना के पश्चात् चौबीसी में पूजा-भक्ति का कार्यक्रम रखा गया था।— भक्तों की भीड़ से मन्दिर खचाखच भर गया था। पपौराजी क्षेत्र की पूजा तथा चन्द्रप्रभु की पूजा के पश्चात् गुरुदेव ने निम्नोक्त-स्तवन गवाया था:—

**धन्य दिवस धन्य आजनो**

**धन्य धन्य घड़ी तेह,**

**धन्य समय प्रभु माहरो...**

**दरशन दीतुं रे आज... मन लाग्युं रे मारा नाथजी।**

**सुन्दर मूरत दीठी ताहरी,**

**केटले दिवसे आज,**

**नयन पावन थया माहारा,**

**पाप तिमिर गयां भाज,**

**मन लाग्युं रे मारा नाथजी!**

पूज्य गुरुदेव की भावभीनी भक्ति के पश्चात् पूज्य बेनश्री बेन ने भी भक्ति करायी थी—

**नाथ हो लबलीन तुम्हारी महिमा गाये...**

**हाँ जी हाँ हम गाये गाये...**

**यात्रा करके आनन्द पाये... नाथ हो....**

—इसप्रकार आनन्दपूर्वक पपौराजी जिनधाम की यात्रा समाप्त हुई। पपौराजी टीकमगढ़ से तीन मील दूर है; वहाँ संघ के भोजनादि की व्यवस्था टीकमगढ़ जैन समाज की ओर से हुई थी।



दोपहर को टीकमगढ़ में प्रवचन था। टीकमगढ़ में ४-५ मंदिर हैं। मुख्य मंदिर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ की ५ फुट ऊँची भव्य प्रतिमा विराजमान है। प्रवचन के बाद टीकमगढ़ जैन समाज तथा पपौराजी क्षेत्र कमेटी की ओर से गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र अर्पित किया गया था। अभिनन्दन-समारोह के पश्चात् टीकमगढ़ से रवाना होकर आहारक्षेत्र पहुँचे....

### आहारजी तीर्थक्षेत्र

यह एक अतिशय क्षेत्र है। क्षेत्र के निकट ही तीन विशाल सरोवर हैं। वहाँ पहुँचते ही यात्रीगण श्री शान्तिनाथ प्रभु से भेंट करने के लिये इसप्रकार दौड़े जैसे बिछुड़ा हुआ बालक माता से मिलने दौड़ता है! लगभग १८ फीट ऊँची शान्तिनाथ भगवान की भव्य खड्गासन प्रतिमा को देखकर भक्तों को अत्यन्त हर्ष हुआ। शान्तिनाथ भगवान के दोनों ओर कुंथुनाथ तथा अरहनाथ भगवान की १२ फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। उन तीन रंग के तीन भगवन्तों का मनोहर दृश्य भक्तों को मुग्ध कर लेता है। इसके अतिरिक्त ७ मंदिर तथा २ मानस्तम्भ भी हैं। नव-प्रतिष्ठित बाहुबलि भगवान की दस फीट ऊँची प्रतिमा अत्यन्त मनोज्ञ एवं भाववाही है। पुरातत्व संग्रहालय में अनेक खण्डित प्राचीन मूर्तियों का संग्रह है। वन्दना के पश्चात् स्वागत-समारोह में गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया और गुरुदेव का मंगल-प्रवचन हुआ। क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने संघ के भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था की थी।

सायंकाल शान्तिनाथ भगवान के सन्मुख आहारक्षेत्र की पूजा तथा भक्ति हुई थी—

**मैं तेरे ढिग आया रे...**

**शान्ति प्रभु ढिग आया...**

**मैं रटता रटता आया रे....**

**गुरुवर के साथ आया....**

भक्ति के पश्चात् आहारजी से प्रस्थान करके टीकमगढ़ आये और वहाँ जिनमन्दिर के आगे मंडप में भक्ति हुई—

**तुमसे लागी लगन... ले लो अपनी शरन...**

**पारस प्यारा... मेटो मेटो जी संकट हमारा...**

भक्ति के रंग में रंगे हुए भक्तों को नये-नये स्थानों पर जिनेन्द्र-भक्ति करते हुए हर्ष होता था। रात्रि को संघ पपौराजी लौट आया था।

—इसप्रकार एक ही दिन में पपौराजी, आहारजी तथा टीकमगढ़ की यात्रा समाप्त हुई। गुरुदेव के साथ नये-नये जिनधामों की यात्रा करते हुए भक्तों को अपने देश (सौराष्ट्र) के स्मरण का तो अवकाश ही नहीं मिलता था... तीर्थ वन्दना करते हुए एक ही प्रश्न उठता था कि अब कौन-सा तीर्थ आयेगा ?

### ललितपुर—( वैशाख कृष्ण २, ता० २४-४-५९ )

प्रातःकाल पाँच बजे पपौराजी से ललितपुर की ओर प्रस्थान किया... पपौराजी से १६ मील चलने पर महरौनी ग्राम आता है। वहाँ के जैन समाज ने पूज्य गुरुदेव का स्वागत किया था और संघ के यात्रियों के लिये भी चाय आदि की व्यवस्था की थी। महरौनी में एक विशाल भव्य जिन मंदिर है; उसकी वन्दना करके करीब साढ़े सात बजे गुरुदेव संघ सहित ललितपुर पहुँचे और गाजे-बाजे के साथ भव्य स्वागत-जुलूस नगर से प्रारम्भ होकर क्षेत्रपालजी तक गया जहाँ संघ के ठहरने की उत्तम व्यवस्था की गई थी। स्वागत-जुलूस में हजारों नर-नारियों ने उत्साह-पूर्वक भाग लिया था। क्षेत्रपाल में एक सुन्दर मण्डप बनाया गया था। कुछ दिनों पहले वहीं एक सुन्दर मानस्तम्भ का निर्माण हुआ है। वहाँ पहुँचते ही गुरुदेव ने मांगलिक-प्रवचन किया और उसके बाद पूजा-भक्ति आदि के कार्यक्रम हुए। क्षेत्रपाल के अतिरिक्त ललितपुर में तीन विशाल जिनमन्दिर तथा जैन समाज के करीब पाँच सौ घर हैं। समाज की ओर से संघ के भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। सायंकाल ३ से ४ बजे तक गुरुदेव का प्रवचन था, जिसे सुनने के लिये ललितपुर की जैन तथा अजैन जनता उमड़ पड़ी थी। प्रवचन से पूर्व श्री पं० परमेश्वरदासजी ने पूज्य गुरुदेव का विस्तृत परिचय दिया था। रात्रि को तत्त्वचर्चा होती थी। स्वर्गीय पं० महेन्द्रकुमारजी न्यायाचार्य भी उन दिनों ललितपुर आये हुए थे। उन्होंने गुरुदेव के समक्ष कुछ शंकाएँ रखी थीं और गुरुदेव ने उनका सुन्दर समाधान किया था। पूज्य श्री रामजीभाई के साथ भी उनकी चर्चा प्रतिदिन २-३ घण्टे तक होती थी; जिसमें अनेक जिज्ञासुजन भाग लेते थे।

### देवगढ़ ( वैशाख कृष्ण ३, ता० २५-४-५९ )

दूसरे दिन प्रातःकाल ५ बजे ललितपुर से देवगढ़ क्षेत्र की वन्दना करने गये थे। वहाँ डाकुओं का भय होने से साथ में पुलिस की व्यवस्था करनी पड़ी थी। देवगढ़ में छोटा सा पर्वत है... अपने नाम के अनुसार सचमुच वह देवों का गढ़ ही है, क्योंकि वहाँ लाखों की संख्या में प्राचीन जैन मूर्तियाँ हैं। पर्वत पर चढ़ने में करीब १५-२० मिनट लगते हैं। ऊपर तीन परकोटों के भीतर ३२



मन्दिर हैं तथा अपार प्राचीन जैन वैभव इधर-उधर बिखरा पड़ा है। सुन्दर कलामय लाखों जिन प्रतिमाएँ खण्डित दशा में विद्यमान हैं। वहाँ मूर्तियों की संख्या के सम्बन्ध में कहा जाता है कि—चावल के थैले में से एक-एक चावल प्रत्येक मूर्ति के आगे चढ़ाया जाये तो भी चावल कम पड़ेंगे! मुख्य मन्दिर में शान्तिनाथ भगवान की १२ फीट ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। चारों ओर के अनेक मंदिरों की रचना देखकर ऐसा अनुमान होता है कि मुख्य मंदिर के आसपास बावन जिनालय होंगे। एक प्राचीन प्रस्तरस्तम्भ में भगवान की तथा मुनियों की प्रतिमाएँ काटी गई हैं और निचले भाग में अर्जिका-माता की मूर्ति भी घिसी हुई हालत में दिखाई देती है। दीवारों में कहीं भगवान की माताजी के सोलह स्वप्न हैं, तो कहीं देवियाँ माता की सेवा कर रही हैं। कहीं पंचपरमेष्ठी भगवान शोभा दे रहे हैं तो कहीं पीछी-कमण्डलयुक्त मुनिवरों की प्रतिमाएँ हैं—इसप्रकार पर्वत पर चारों ओर विविध प्रकार के भाववाही एवं कलात्मक दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं। इसके उपरान्त एक मंदिर में चक्रवर्ती द्वारा राज वैभव त्यागने का सुन्दर दृश्य है। चक्रवर्ती मुनि के चरणों में चौदह रत्न तथा नव निधान पड़े हैं; और मुनिराज आत्मध्यान में लीन हैं।—उस भाववाही दृश्य को देखकर भक्तों के हृदय से सहज ही ध्वनि निकल पड़ती है कि—

**धन्य मुनीश्वर आत्महित में, छोड़ दिया घरबार....**

**कि तुमने छोड़ा सब परिवार....**

—इसप्रकार देवगढ़ के प्राचीन जिन वैभव को देखकर यात्रीगण पूज्य गुरुदेव के साथ नीचे उतरे। नीचे धर्मशाला में एक जिनालय है; वहाँ मुनिराज की अद्भुत प्रतिमा है। महा समर्थ आचार्य, प्रतिभा सम्पन्न दिगम्बर मुनिराज परम अध्यात्म तत्त्व का उपदेश दे रहे हैं और मुनिगण उसका श्रवण कर रहे हैं... आचार्यदेव की मुद्रा वीतरागी दिगम्बर दशा का स्पष्ट दर्शन कराती है। उस वीतरागी मुद्रा से रत्नत्रय झलकता है। ऐसा लगता है कि जैसे वह प्रतिमा कुछ बोलने ही वाली है! उसे देखते ही दिगम्बर मुनिमार्ग की सहज प्रतीति हो जाती है और मुमुक्षु का मस्तक मुनिराज के चरणों में झुक जाता है।

यह अद्भुत मुनि प्रतिमाजी पहले पर्वत के ऊपर ही थीं, किन्तु विशेष सुरक्षा की दृष्टि से उन्हें नीचे लाकर मन्दिर में विराजमान किया गया है। उन मुनि प्रतिमा के दर्शन से गुरुदेव को तथा भक्तों को अपार हर्ष हुआ और सबने भावपूर्वक अर्घ्य चढ़ाकर उन मुनि भगवान की पूजा की।

देवगढ़ की प्राचीन कला देशभर में विख्यात है; अधिकांश मूर्तियाँ करीब ८०० या १०००

वर्ष प्राचीन हैं; कुछ मूर्तियाँ तो इससे भी अधिक प्राचीन हैं। उस भव्य जिन दरबार को देखकर ऐसा लगता कि—अहा! जब इन लाखों प्रतिमाओं का निर्माण हुआ होगा, उन दिनों दिगम्बर जैनधर्म का कैसा स्वर्ण-काल होगा! विशेष अन्वेषण किया जाये तो वहाँ से जैनधर्म की महत्ता सूचक अनेक ऐतिहासिक तथ्य प्राप्त हो सकते हैं।

गुरुदेव के साथ उस महान जिन दरबार की वन्दना करके संघ ने ललितपुर के लिये प्रस्थान किया। मार्ग में जाखलौन ग्राम के जैन समाज ने गुरुदेव का स्वागत किया था और संघ को ठंडा दूध का शर्बत पिलाया था। संघ १२ बजे ललितपुर पहुँच गया था।

सायंकाल ३ से ४ बजे तक गुरुदेव का प्रवचन और रात्रि को तत्त्वचर्चा हुई थी। ललितपुर से दो बसों में कुछ यात्री चन्देरी की चौबीसी के दर्शन करने गये थे। पूज्य गुरुदेव आदि तो शिखरसम्मोद यात्रा के समय ही चन्देरी-चौबीसी की वन्दना कर आये थे।

### **बारां होकर चाँदखेड़ी ( वैशाख कृष्ण ४ ता० २६-४-५९ )**

प्रातःकाल जिनेन्द्रदेव के दर्शन करके ललितपुर से बारां की ओर प्रस्थान किया। आज की यात्रा करीब ढाई सौ मील लम्बी थी और मार्ग जगह-जगह वन-प्रदेश में होकर गुजरता था। दोपहर को शिवपुरी में भोजन करके आगे बढ़े। मार्ग के छोटे-छोटे ग्रामों में भी गुरुदेव के दर्शनार्थ लोगों की भीड़ लग जाती थी। दिनभर की अविराम यात्रा के पश्चात् सायंकाल पाँच बजे बारां पहुँचे। वहाँ के जैन समाज तथा गुजराती भाइयों ने गुरुदेव का भव्य स्वागत किया और संघ को भोजन कराया। ग्राम के बाहर मंदिर में ठहरने की व्यवस्था की थी। दिन भर की यात्रा से थके हुए यात्री भगवान की विशाल प्रतिमाओं को देखकर प्रफुल्लित हो गये। मंदिर में शान्तिनाथ भगवान की १२ फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा तथा नेमिनाथ भगवान की छह फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा आठ सौ वर्ष प्राचीन हैं। इसके उपरान्त कुंदमुनि के प्राचीन चरणकमल हैं; किंतु यह कौन से कुंदमुनि हैं, इस सम्बन्ध में कोई प्रमाणभूत जानकारी प्राप्त नहीं होती। आँगन में भी एक चबूतरे पर प्राचीन चरणकमल हैं और गाँव में भी एक मन्दिर है। जिन मंदिरों की वन्दना करके शाम को सात बजे तीर्थक्षेत्र 'चाँदखेड़ी' के लिये प्रस्थान किया और ऊबड़-खाबड़ मार्ग तय करके रात को १० बजे चाँदखेड़ी पहुँचे। अंधेरी रात, जंगली मार्ग, डाकुओं से आतंकित प्रदेश! कभी कोई मोटर रुक जाती थी, तो कभी मार्ग भूल जाते थे।—इसप्रकार अठारह घण्टे की लगातार मुसाफिरी के बाद चाँदखेड़ी पहुँचे। वहाँ के भोंयरे में विराजमान आदिनाथ भगवान की प्रतिमा अति विशाल



एवं मनोज्ञ हैं; उन्हें देखते ही भक्तों के हृदय को शान्ति प्राप्त होती है और यात्रा की थकान दूर हो जाती है।

### चाँदखेड़ी ( वैशाख कृष्णा ५, ता० २७-४-५९ )

प्रातःकाल गुरुदेव के स्वागत के पश्चात् मंगल-प्रवचन और फिर मंदिर में समूह पूजन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। वहाँ के जिन मंदिर में सीमन्धर भगवान के समवसरण की सादी रचना है; जिसमें सोनगढ़ की भाँति श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव विदेहक्षेत्र में सीमन्धर भगवान के दर्शन कर रहे हैं। वह दृश्य दर्शनीय है। मंदिर के नीचे करीब २५ फुट की गहराई में एक विशाल भोंयरा है, जिसमें आदिनाथ भगवान की सवा छह फुट ऊँची अति मनोज्ञ पद्मासन प्रतिमा विराजमान हैं। ऐसी सुन्दर प्रतिमायें बहुत कम दिखाई देती हैं। इसके अतिरिक्त महावीर भगवान की अति मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान हैं। भोंयरे के शान्त वातावरण में अति प्रशांत जिनेन्द्रदेव के सन्मुख भक्तों की सहज ही ध्यान-भावना जागृत होती है। उन भाववाही प्रतिमाओं के दर्शन से गुरुदेव तथा भक्तों की अत्यन्त हर्ष हुआ था और वे पुनः पुनः दर्शन करने गये थे। भोंयरे में चौबीस तीर्थकर आदि अनेक भगवन्त विराजमान हैं।

समवसरण के सन्मुख समूह पूजन में निम्नोक्त तीन पूजायें हुई थीं—



चाँदखेड़ी में स्थित भगवान ऋषभदेव की मनोज्ञ प्रतिमा

- [ १ ] समवशरण के मध्य श्री जिनेन्द्रदेव निहार के,  
मग-वचन भक्ति लगाय पूजों हर्ष बहु हिय धारके ॥
- [ २ ] कुन्दकुन्द आदि ऋद्धि धारक मुनिन की पूजा करूँ,  
ता करी पातक हूँ सारे सकल आनन्द विस्तारूँ ॥
- [ ३ ] आदिनाथ जिन चरण कमल पर  
बलि बलि जाऊँ मन वच काय,  
हो करुणानिधि भव दुःख मेटो,  
याते मैं पूजूँ प्रभु पाय ।

चाँदखेड़ी अतिशय क्षेत्र राजस्थान में खानपुरा ग्राम के निकट है। करीब ३०० वर्ष पहले एक श्रावक को स्वप्न आने पर आदिनाथ भगवान की वह विशाल प्रतिमा घोर जंगल में से मिली थी और तीन सौ वर्ष पहले उसकी वहाँ स्थापना की गई थी। मूर्ति के प्रतिष्ठा-समारोह में करीब पाँच लाख रुपये खर्च हुए थे। कोटा-बूँदी के राजाओं ने प्रतिष्ठा-महोत्सव में भाग लिया था। बाहर से ११ भट्टारक तथा लाखों नर-नारी आये थे और रथयात्रा के समय रथ में आठ हाथी जोते गये थे। मूर्ति विरोधी औरंगजेब के शासनकाल में उस मंदिर का निर्माण हुआ है;—ऐसा उल्लेख झालरापाटन के सरस्वती भंडार की एक पुस्तक में पाया जाता है। चाँदखेड़ी के निकट ही रूपली नदी है; बरसात के मौसम में वह नदी भोंयरे में प्रवेश करके अपने जल से आदिनाथ भगवान के चरणों का अभिषेक कर जाती है। मन्दिर के चारों ओर विशाल धर्मशाला है; वहाँ की पुष्पवाटिका में चम्पा और चमेली के करीब ९० वर्ष प्राचीन वृक्ष हैं। खानपुरा ग्राम में दो मंदिर हैं; वहाँ गुरुदेव के आगमन के निमित्त से चार दिन का मेला लगा था। रात्रि को समवसरण में उल्लास भरी भक्ति हुई थी, जिसमें पूज्य बेन श्री बेन ने निम्नोक्त सुन्दर स्तवन गवाये थे—

( १ ) मारा ऋषभ जिनेश्वर, नैया मारी भव से पार लगाजो... हाँ

( २ ) अय सीमंधरनाथजी! मैं आया तेरे दरबार में....

भगवान का दरबार खचाखर्च भरा हुआ था; अद्भुत भक्ति देखकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो गये थे। अन्त में भगवान के साक्षात् दर्शन की भावना भाते हुए पूज्य बेन श्री बेन ने यह स्तवन गवाया था—

‘कब दर्शन होगा..... आपके दरबार में.....’ उस दिन की अद्भुत भक्ति देखकर भक्तों



को अपार हर्ष हो रहा था। दूसरे दिन प्रातःकाल (वैशाख कृष्ण ६, ता० २८ अप्रैल) को भी जिन मंदिर में अत्यन्त उल्लास एवं भक्तिभाव से समूह पूजन हुई थी। तत्पश्चात् गुरुदेव के शुभ हस्त से वहाँ के 'सरस्वती-भवन' की शिलान्यास विधि सम्पन्न हुई थी। प्रवचन के पश्चात् जिनेन्द्रदेव की रथयात्रा का जुलूस निकला था; जिसमें हाथों से भगवान का रथ खींचते हुए भक्तों को अपार हर्ष हो रहा था। दोपहर को महिला-सम्मेलन के बाद मंगल आशीर्वाद के रूप में आध घण्टे तक गुरुदेव का प्रवचन हुआ और प्रवचन के पश्चात् संघ ने झालरापाटन की ओर प्रस्थान किया।

### झालरापाटन—

चाँदखेड़ी से प्रस्थान करके सायंकाल ५ बजे झालरापाटन पहुँचे। ग्राम के बाहर विशाल भव्य जिन मंदिर है; किंतु वह बन्द था। मंदिर के द्वार पर चार जिनबिम्ब पत्थर में अंकित हैं। ग्राम में पहुँचकर एक अति भव्य जिनालय के दर्शन किये। जिनालय में शांतिनाथ भगवान की बारह फीट ऊँची मनोज्ञ प्रतिमा ११०० वर्ष प्राचीन हैं; उन्हें देखकर भक्त प्रफुल्लित हो उठे और शांतिनाथ प्रभु के चरणों में शांतिपूर्वक बैठ गये। मंदिर के द्वार पर विशाल आकार के दो सफेद हाथी खड़े हैं और चारों ओर आँगन में अनेक वेदियाँ तथा जिनबिम्ब शोभायमान हैं। एक मंदिर में चाँदी की कलात्मक वेदी है और उसके दोनों ओर लगे हुए दर्पणों में देखने से अनेक वेदियों की पंक्ति दिखाई देती है, जैसे अकृत्रिम चैत्यालयों की पंक्ति हो! पूज्य बेन श्री बेन उस विशाल मंदिर को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई थीं और अकृत्रिम चैत्यालयों का स्मरण करके जय-जयकार कर रही थीं। उस मंदिर के दर्शनों से एक तीर्थ की यात्रा जितना आनन्द हुआ था। मंदिर का कलात्मक शिखर १०० फीट ऊँचा तथा २१ स्वर्ण-कलशों से शोभायमान है।

जिन मंदिर की वन्दना के पश्चात् वहाँ के एक विशाल रमणीक उद्यान में सायंकालीन भोजन लिया और वहाँ से प्रस्थान करके कोटा पहुँचे। झालरापाटन झालावाड़ जिले का मुख्य ग्राम है; वहाँ दूसरे भी दो मंदिर हैं। गुरुदेव ने रात्रि को वहीं विश्राम किया था।

### कोटा शहर (वैशाख कृष्ण ७-८)

प्रातःकाल गुरुदेव कोटा पधारे और जनता ने भव्य स्वागत किया। स्वागत-जुलूस के आगे हाथी पर धर्मध्वज लहरा रहा था। प्रारम्भ में श्री जुगलकिशोर 'युगल' ने स्वागत-प्रवचन तथा स्वागत-गान द्वारा पूज्य गुरुदेव तथा संघ का स्वागत किया। सेठ पूनमचन्द्रजी, बाबू ज्ञानचन्द्रजी आदि सद्-गृहस्थों की ओर से संघ के भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। बाबू

जम्बूकुमारजी साहब ने भी प्रेमपूर्वक व्यवस्था में भाग लिया था।

कोटा शहर चम्बल नदी तथा एक विशाल सरोवर के किनारे बसा है और रमणीक उद्यानों से शोभायमान है। शहर में करीब सोलह जिन मंदिर हैं, जिनमें पाँच मंदिर एक ही स्थान पर पास-पास बने हैं। एक मंदिर में आदिनाथ भगवान की पाँच फुट ऊँची दो विशाल प्रतिमाएँ हैं। दूसरे मंदिर में धातु के सप्तर्षि भगवन्त तथा धातु की नन्दीश्वर रचना है। एक मंदिर में शान्तिनाथ भगवान की १० फीट ऊँची खड्गासन प्रतिमा है। दूसरे कुछ मंदिर पुरानी हालत में हैं। दोपहर को प्रवचन के समय वहाँ देह की क्षणभंगुरता की एक घटना हो गई थी। रात्रि को बड़े जिन मंदिर में पार्श्वनाथ भगवान सामने भक्ति हुई थी।

वैशाख कृष्णा अष्टमी के दिन श्रद्धांजलि के रूप में अनेक प्रवचन हुए थे; जिनमें कोटा दिगम्बर जैन-समाज की ओर से श्री गट्टलालजी ने तथा अशोकनगर दि० जैन समाज की ओर से पं० हुकुमचन्दजी ने श्रद्धांजलि अर्पित की थी। दोपहर को बाबू ज्ञानचन्दजी और पं० जुगलकिशोरजी के प्रारम्भिक भाषण के पश्चात् बाबू जम्बूकुमारजी ने अभिनन्दन-पत्र पढ़ा था और सेठ पूनमचन्द्रजी ने अर्पित किया था। रात्रि को तत्त्वचर्चा हुई थी। कोटा के जैन समाज ने प्रवचनों में तथा तत्त्वचर्चा में उत्साहपूर्वक भाग लिया था। गुना, अशोकनगर, बूँदी आदि अनेक नगरों से सैकड़ों लोग गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे। रात्रि को चर्चा के पश्चात् पूज्य बेन श्री बेन (चम्पाबेन और शान्ताबेन) को महिला समाज की ओर से अभिनन्दन-पत्र दिया गया था। अभिनन्दन समारोह में अनेक बहनों ने अपने हार्दिक उद्गार तथा भक्तिभाव व्यक्त किया था और भावना भाते हुए कहा था कि—हमारा जीवन भी पूज्य बेन श्री बेन की तरह आध्यात्मिक उन्नति में लगा रहे—ऐसी हमारी भावना है। इनके ज्ञान-वैराग्य की हम क्या बात कहें!—इनकी भक्ति तो अद्भुत है! ऐसी भक्ति हमने आज तक नहीं देखी। श्री राजकुमारीजी न्यायतीर्थ ने अभिनन्दन-पत्र पढ़ा था और श्री सेठानीजी के हाथों से पूज्य बेन श्रीबेन को अर्पित किया गया था। उस समय महिलाओं की सभा में एक हजार से अधिक महिलायें उपस्थित थीं। अभिनन्दन के पश्चात् महिला समाज के विशेष आग्रह से पूज्य बेन श्री बेन ने अत्यन्त गम्भीर एवं वैराग्य झरती वाणी से करीब दस मिनट तक भाषण दिया था। उनके भाषण का रसास्वादन हम भी करें—

“अनन्त काल में जीव ने सब कुछ किया; लेकिन आत्मा का कल्याण कभी नहीं किया। आत्मा कौन है, मैं कौन हूँ, इसका विचार नहीं किया। यह भी नहीं सोचा कि मेरा स्वभाव क्या है,



मुझे आत्मा का सुख कैसे प्राप्त हो सकता है ? सब कुछ बाह्य में ही करता रहा । आत्मा में ही सुख है, आत्मा ही सुख का समुद्र है; किन्तु उसमें कभी दृष्टि नहीं की; सदैव बाहर ही देखता रहा । बाहर से मुझे ज्ञान और सुख प्राप्त होगा—ऐसा मानकर बाह्य में ही देखा । आत्मा में से ही आत्मा का ज्ञान-सुख मिलता है—ऐसा विचार भी जीव ने नहीं किया ।

आत्मा, शरीर से भिन्न है । शरीर जड़ है; वह कुछ नहीं जानता । आत्मा का स्वभाव शरीर से तथा शुभाशुभ वृत्ति से भिन्न, सबका ज्ञाता और ज्ञान-सुख से भरपूर है । ‘मैं कौन हूँ, मेरा स्वभाव क्या है ?’—ऐसी जिज्ञासा करे, रुचि करे तो उसका उपाय भी मिल ही जाता है । जो जिस वस्तु की सच्ची आकांक्षा तथा जिज्ञासा करता है, उसे उसकी प्राप्ति अवश्य ही होती है । आत्मा का विचार भी न करे और बाह्य में त्याग कर डाले तो ऐसे त्याग से आत्मा की प्राप्ति नहीं होती । पहले तो जिज्ञासा और रुचि बढ़ाना चाहिये कि मैं कौन हूँ, मेरे आत्मा का क्या स्वरूप ? त्याग बाद में होता है, पहले आत्मा की श्रद्धा होती है; किन्तु जीव ने अनन्त काल से उसका विचार भी नहीं किया ।

करना क्या है ?—आत्मा का विचार करना है; मैं कौन हूँ—उसका निर्णय करना है; यही सर्व प्रथम करने योग्य है । यात्रा-पूजा के शुभभाव आते तो हैं, किन्तु उनसे मेरा आत्मा भिन्न है; मेरा स्वभाव सिद्ध समान है । नारियल में गोले की भाँति मेरा आत्मा शरीर से तथा राग से भिन्न, चैतन्यमूर्ति है । ऐसे आत्मा का विचार करके श्रद्धा करना ही कल्याण का मार्ग है ।”

आगे चलकर पूज्य बेन श्री बेन ने कहा था कि—“हम लोगों का जो कल्याण हो रहा है और होनेवाला है, वह सब हमारे गुरुदेव का प्रभाव है; सोनगढ़ में जो कुछ है, वह गुरुदेव के प्रताप से ही है । उन्हीं के प्रताप से हमारी दृष्टि पलटी है, हमारा जीवन पलटा है और यह सब प्रभावना भी उन्हीं के कारण हो रही है । स्वामीजी के स्वागत में आप सबने अच्छा उत्साह दिखाया है; किन्तु वास्तव में तो स्वामीजी जो कुछ कहते हैं, उसे ठीक रूप से समझकर स्वीकार करना ही उनका स्वागत है । यथार्थ वस्तुस्वरूप का विचार करने से आत्मा का पता चलता है । आत्मा का जो स्वाभाविक अंश प्रगट होता है, वही धर्म है । आत्मा के स्वाभाविक ज्ञान-दर्शन-सुख में ही धर्म है । गुरुदेव का परिचय करके आत्मा का कल्याण करना ही मनुष्य भव का सर्वोत्तम कार्य है; इसी कार्य के लिये यह मनुष्य भव प्राप्त हुआ है । इस मनुष्य जन्म में ज्ञानस्वरूप आत्मा का निर्णय करके स्वसन्मुख होने का पुरुषार्थ करना चाहिये—सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति भी धर्मी जीवों के होती है । सबमें मुख्य बात—अपनी आत्मा का कल्याण करना ही हम सबका कर्तव्य है ।

(यहाँ तो पूज्य बेन श्री बेन के सारगर्भित भाषण का मात्र सारांश ही दिया है) आत्महित सम्बन्धी वह भाववाही भाषण सुनकर सारी महिला सभा हर्षित हो उठी थी। यात्राकाल में उस दिन प्रथम बार पूज्य बेन श्री बेन का उपदेश सुनकर संघ के यात्रियों को भी हर्ष हो रहा था।—इसप्रकार जय-जयकार पूर्वक महिला-सभा की समाप्ति के साथ ही कोटा शहर का द्विदिवसीय कार्यक्रम समाप्त हुआ।

### नीमच (वैशाख कृष्णा ९ ता० १-५-५९)

संघ ने प्रातःकाल कोटा से नीमच की ओर प्रस्थान किया। गुरुदेव कोटा से बूँदी पधारे थे; वहाँ समाज ने भव्य स्वागत किया था। संघ उदयपुर होता हुआ नीमच पहुँचा। मार्ग में भानपुरा ग्राम में जैन भाइयों ने चाय-नाश्ते के लिये कुछ देर ठहराया था। नीमच का जैन समाज गुरुदेव के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था; आसपास के ग्राम से अनेक व्यक्ति आये थे; किन्तु गुरुदेव के न आने से उन्हें बड़ी निराशा हुई थी। संघ का हार्दिक सन्मान किया था। दोपहर करे शांतिनाथ भगवान के दरबार में पूज्य बेन श्री बेन ने भावभरी भक्ति कराई थी। वहाँ के जिनमंदिर में सुन्दर चित्र हैं। एक चित्र में मृत्यु के समय जीव, शरीर से कहता है कि—“तेरे लिये मैंने सब कुछ किया है, इसलिये तू मेरे साथ चल!” शरीर उत्तर देता है कि—“मेरा स्वभाव ही तेरे साथ न आने का है।” इत्यादि। जिनमंदिर में पूजा-भक्ति के बाद संघ ने चित्तौड़ की ओर प्रस्थान किया और वहाँ कलक्टर की कचहरी के नव निर्मित भवन में उतरा। चित्तौड़ के किले में बने हुए दो स्तम्भ दूर-दूर से यात्रियों का ध्यान आकर्षित करते हैं। उनमें एक राणा मानसिंह का विजय स्तम्भ है और दूसरा है जैन धर्म का कीर्तिस्तम्भ अर्थात् मानस्तम्भ।

### चित्तौड़ (वैशाख कृष्णा १०, ता० २-५-५९)

गुरुदेव सवेरे ८.०० बजे चित्तौड़ पधारे और सीधे किला देखने गये। यात्री भी किला देखने के लिये गये थे। सात गढ़ पार करने के बाद मुख्य गढ़ में पहुँचते हैं। प्रारम्भ में—प्रवेश द्वार के निकट ही एक जिनमन्दिर में मल्लिनाथ भगवान के दर्शन होते हैं। उस ऐतिहासिक किले में १२२ फीट ऊँचा विजय स्तम्भ है, तथा एक जिनमन्दिर के सामने ७ मंजिल का ८० फीट ऊँचा जैन कीर्ति स्तम्भ (—मानस्तम्भ) है। मानस्तम्भ अत्यन्त सुन्दर तथा कलात्मक है। चारों ओर आदिनाथ भगवान की पाँच फीट ऊँची खडगासन प्रतिमाएँ उसी पत्थर में कटी हुई हैं... मानस्तम्भ के भीतरी भाग में ऊपर तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ हैं... ऊपर चारों ओर कलात्मक कमानों में पाँच-पाँच



जिनबिम्ब बने हैं और पन्द्रह-बीस व्यक्तियों के बैठने जितना स्थान है। मानस्तम्भ के ऊपर शांत वातावरण में बैठकर सिद्ध भगवान के गुणों का स्मरण करते हुए भक्तों को शांति का अनुभव होता है। मानस्तम्भ के पास बड़े मन्दिर है जो प्राचीन और सुन्दर नक्काशीवाला है। उस मन्दिर का जीर्णोद्धार हो रहा है और वहाँ मल्लिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा होना है। तोपखाने के निकट एक वृक्ष के नीचे प्राचीन अवशेषों में अनेक दिगम्बर जिनप्रतिमाएँ भी हैं। किले की दीवारों में भी कहीं कहीं जिनप्रतिमाओं के दर्शन होते हैं।

महाराणा प्रताप को सहायता देनेवाले जैन वीर भामाशाह चित्तौड़ के ही थे। विजय स्तम्भ के साथ-साथ जैनधर्म के कीर्तिस्तम्भ का होना उस राज्य के प्राचीन जिन वैभव तथा कीर्ति की घोषणा है। उपरान्त, किले में अनेक दर्शनीय स्थल हैं। सात कोटों वाले प्राचीन गढ़ को देखते हुए उसे निर्माताओं का स्मरण होने पर ऐसा लगता है मानों वह विशाल गढ़ पुकार-पुकार कर कहा रहा हो कि—मेरा निर्माण करानेवाले और मेरे अन्दर रहनेवाले भी मृत्यु से अपनी रक्षा नहीं कर सके! किले में खड़ा हुआ कीर्ति स्तम्भ मानों कह रहा हो कि एक जैनधर्म ही सबका रक्षक है। चित्तौड़ शहर में भी एक छोटा-सा जिनमन्दिर है; वहाँ दर्शन-पूजन किये और भोजन तथा प्रवचन के बाद प्रस्थान करके संघ उदयपुर पहुँचा।

### उदयपुर (वैशाख कृष्ण ११-१२)

प्रातःकाल गुरुदेव उदयपुर पधारे और जैन समाज ने उत्साहपूर्वक भव्य स्वागत किया। स्वागत के समय सुसज्जित मंडप में एक बालिका ने मारवाड़ी भाषा में स्वागत गान गाया और सेठ बन्सीलालजी ने स्वागत-भाषण दिया। आसपास के ग्रामों से सैकड़ों नर-नारी गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे। उदयपुर प्राकृतिक दृश्यों से शोभायमान दर्शनीय नगर है और वहाँ नौ जिनमन्दिर हैं। सरोवर के बीच एक भव्य महल है। 'स्वरूप सागर' नाम का भी एक सुन्दर सरोवर है। म्यूजियम में अनेक प्राचीन जिनबिम्ब हैं। रात्रि को उदासीन आश्रम के जिनालय में भक्ति का कार्यक्रम था। पूज्य बेन श्री बेन की भक्ति के पश्चात् एक बालिका ने नृत्य-भजन के साथ सिद्धपद की भावना का दृश्य (चलो मन... अपने देश...) बतलाया था। दूसरे दिन प्रातःकाल जिनमन्दिर में समूह पूजन का कार्यक्रम तथा दोपहर को अभिनन्दन-समारोह हुआ था, जिसमें पूज्य गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र अर्पित किया गया था। रात्रि को बम्बई के प्रतिष्ठा-महोत्सव की फिल्म दिखलाई गई थी। गुरुदेव तथा संघ के स्वागत-सन्मान में उदयपुर समाज ने अत्यन्त उत्साह एवं वात्सल्य प्रदर्शित

किया था। दो दिन का कार्यक्रम समाप्त होते ही वैशाख कृष्णा १३, ता० ५-५-५९ के प्रातःकाल गुरुदेव ने उदयपुर से संघ सहित केशरियाजी की ओर प्रस्थान किया।

### केशरियाजी ( वैशाख कृष्णा १३, ता० ५-५-५९ )

गुरुदेव का आगमन होते ही भव्य स्वागत हुआ। मार्ग में दो जिनालयों की वन्दना करते हुए केशरियाजी मन्दिर में पहुँचे। ग्राम का प्राचीन नाम धुलेव है। किन्तु मुख्य मन्दिर में खूब केशर पढ़ने के कारण वह क्षेत्र 'केशरियाजी' के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। वहाँ एक विशाल प्राचीन बढ़िया कलाकृति से युक्त मन्दिर है; जिसमें आदिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान हैं। श्वेताम्बर बंधु भी उनकी पूजा करते हैं, इसलिये प्रतिमाजी दिन भर केशर से आच्छादित रहती हैं। मन्दिर के पिछले भाग में आदिनाथ भगवान की एक दूसरी प्रतिमा है; वहाँ समूह पूजन हुई थी। चारों ओर गोखों में भी अनेक जिनबिम्ब विराजमान हैं। केशरियाजी में दर्शन-पूजन तथा भोजन के पश्चात् संघ ईडर की ओर रवाना हुआ और सायंकाल तीन बजे गुजरात की भूमि में प्रवेश किया... महाराष्ट्र और कन्नड़, तामिल और विदर्भ, बुन्देलखण्ड और राजस्थान आदि की लम्बी यात्रा के पश्चात् तीन महीने बाद गुजरात की भूमि, गुजराती भाषा पाकर यात्रियों को आनन्द आ रहा था। सायंकाल संघ ईडर पहुँचा।

### ईडर

प्राचीनकाल में ईडर एक वैभवशाली नगर था। इसके चारों ओर रमणीक पर्वत तथा मध्य में सरोवर है। ग्राम में तीन प्राचीन एवं विशाल जिन मंदिर हैं। एक पहाड़ी पर भी विशाल दिगम्बर जिन मंदिर हैं; जिसमें आदिनाथ भगवान की (केशरियाजी के समान) प्रतिमा विराजमान है; मंदिर में दूसरी अनेक मूर्तियाँ हैं। संगमरमर के एक विशाल शिलापट पर १७० विदेही तीर्थंकर अंकित हैं।

दूसरे पहाड़ है वहाँ पर (जो 'घंटीआ पहाड़' के नाम से प्रसिद्ध है) वह स्थान है जिसे श्रीमद् राजचन्द्रजी ने 'सिद्ध शिला' के नाम से प्रसिद्ध किया है। उसी पर्वत पर श्रीमद् राजचन्द्रजी ध्यानादि करते थे और वहीं उन्होंने विशेष प्रमोद व्यक्त किया था। उपरान्त वहाँ स्टेशन के निकट एक टेकरी पर दिगम्बर मुनियों की स्मृति में बनवाई गई कुछ प्राचीन छतरियाँ (स्मारक) हैं।

वैशाख कृष्णा १३ की रात्रि को शांतिनाथ जिनालय में तत्त्वचर्चा हुई थी और दूसरे दिन प्रातःकाल पर्वत के मंदिर में दर्शन-पूजन तथा भक्ति का कार्यक्रम रखा था.... दि० जिन मंदिर जो बड़ा विशाल है, वहाँ दर्शनार्थ-पर्वत पर चढ़ते हुए पूज्य बेन श्री बेन प्रमोदपूर्वक भक्ति करा रही



थीं। मंदिर में अनेक वेदी हैं, पूजा-भक्ति के पश्चात् पर्वत पर ही संघ ने जलपान किया। यात्रा के पश्चात् ईडर ग्राम में आये, यहाँ एक मंदिर की स्वाध्यायशाला में श्रीमद् राजचन्द्र का 'द्रव्य संग्रह' देखा। दोपहर को प्रवचन के बाद यात्रीगण 'घंटीआ पहाड़' पर गये थे, वहाँ आश्रम बना है। कहते हैं कि उस पर्वत की तलहटी में शेर रहते हैं। पूज्य गुरुदेव ने भक्तों सहित वहाँ श्रीमद् के स्थानों का अवलोकन किया। सेठ भोगीलालजी ने गुरुदेव के प्रति अत्यन्त भक्तिभाव प्रदर्शित किया था और पर्वत पर यात्रियों को भोजन कराया था। भोजन के पश्चात् यात्री नीचे उतरे। किन्तु गुरुदेव तथा कुछ भक्तों ने रात्रि को वहीं विश्राम किया था। पर्वत पर महावीर भगवान के सन्मुख सुन्दर भक्ति हुई थी। जिसमें पूज्य बेन श्री बेन ने चैतन्य के आनन्दरस से भरपूर सुन्दर गुजराती काव्य गवाया था—उसकी प्रारम्भिक कुछ पंक्तियाँ देखिये—

**धन्य रे दिवस आ अहो...**

**जागी रे शांति अपूर्व,**

**दस वरसे रे धारा उल्लसी**

**मिट्यो उदय-कर्म नो गर्व रे। धन्य रे ( इत्यादि )**

'धन्य दिवस' का यह अपूर्व भाववाही काव्य सुनकर भक्तों को अपार हर्ष हुआ था। वे अपने को वह अवसर प्राप्त होने से धन्य मान रहे थे। पर्वत का अवलोकन करते हुए गुरुदेव भक्तों को श्रीमद् के गहरे अंतरंग भावों का परिचय करा रहे थे। वैशाख कृष्ण ३० के प्रातःकाल स्टेशन के पास वाली छतरियों (स्मारकों) का अवलोकन करके संघ ने ईडर से सोनासण की ओर प्रस्थान किया। ईडर में संघ के भोजनादि की व्यवस्था अहमदाबाद समाज की ओर से की गई थी।

**सोनासण ( वैशाख कृष्ण ३० )**

गुरुदेव का आगमन होते ही सोनासण के समाज ने तथा आस-पास के ग्रामों के गुजराती भाइयों ने भावपूर्वक भव्य स्वागत किया... दोपहर को प्रवचन के बाद अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया था और रात्रि को मंदिर में भक्ति हुई थी। मंदिर में आदिनाथ भगवान की सुन्दर प्रतिमा विराजमान है और पास ही गंधकुटी पर पार्श्वनाथ-प्रभु शोभा दे रहे हैं। संघ ने सोनासण से फतेहपुर की ओर प्रस्थान किया।

दक्षिण भारत के तीर्थधामों की यात्रा के हेतु निकला हुआ 'पूज्य श्री कानजी स्वामी दि० जैन तीर्थ यात्रा संघ' अनेकानेक तीर्थों की यात्रा करके अब सोनगढ़ की ओर लौट रहा है, मोटरों में

आज यात्रा-संघ की अन्तिम यात्रा है। इस यात्रा के बाद अब यात्री एक-दूसरे से पृथक् हो जायेंगे—इस विचार से यात्रियों के हृदय में भावोद्रेक हो रहा है; कोई यात्री यात्रा की सुखद घटनाओं का स्मरण कर रहे हैं, कोई गद्गद् होकर एक-दूसरे से क्षमा याचना करके विदा ले रहे हैं। सबके हृदय में यात्रा के मधुर संस्मरण भरे हैं।

सायंकाल साढ़े छह बजे मोटरें फतेहपुर पहुँची और यात्रा संघ का प्रवास पूरा होने के कारण दिल्ली से आई हुई मोटर बसों ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। यात्रियों को छोड़कर खाली बसें लेकर लौटते हुए ड्राइवर और कन्डक्टर भी गद्गद् हो गये थे.... जाते-जाते मार्ग में सोनासण में वे गुरुदेव के दर्शनों के लिये रुके थे और वहाँ उन्हें यात्रा संघ की ओर से इनाम दिया गया था.... फतेहपुर से कुछ यात्री रात्रि को भक्ति में सम्मिलित होने के लिये सोनासण गये थे और रात्रि को ही फतेहपुर लौट आये थे। गुरुदेव वैशाख शुक्ला प्रतिपदा के दिन रामपुरा होतु हुए फतेहपुर पधारे, यहाँ मुमुक्षुगण बड़ी संख्या में अहमदाबाद आदि स्थान से आये हुए थे और वहाँ गुजरात-सौराष्ट्र की जनता ने गुरुदेव का हार्दिक स्वागत किया।

### फतेहपुर ( वैशाख शुक्ला प्रतिपदा, ८-५-५९ )

गुरुदेव का ७० वाँ जन्म दिवस मनाने के निमित्त से फतेहपुर और गुजरात के जैन समाज में अत्यन्त उत्साह था। वहाँ जैनियों के ४० और पूरे गाँव के कुल २०० घर हैं;—ऐसे ग्राम में करीब २००० आदिमियों के ठहरने की तथा भोजनादि की व्यवस्था की गई थी। मात्र फतेहपुर ही नहीं किंतु गुजरात के अनेक ग्रामों के सद् गृहस्थों ने अपना सहयोग देकर गुरुदेव का जन्मोत्सव मनाया था।

गुरुदेव के साथ अनेक तीर्थ धामों की आनन्दमयी यात्रा के पश्चात् उनका ७० वाँ जन्मोत्सव मनाकर अब अधिकांश यात्री अपने-अपने स्थानों पर जाने के लिये रवाना हो रहे थे। अब गुरुदेव के साथ गुजरात की यात्रा में मुख्यतः सोनगढ़ का भक्तमण्डल ही था। फतेहपुर से प्रस्थान करके शेष यात्री अर्ध रात्रि के समय तलोद पहुँचे।

### तलोद ( वैशाख शुक्ला ३-४, ता० १०-११ )

प्रातःकाल गुरुदेव का आगमन होते ही भव्य स्वागत हुआ। तलोद का नूतन जिन मंदिर अत्यन्त सुन्दर है। मंदिर के निर्माण में सवा लाख रुपया खर्च हुआ है। तीन मंजिल का वह भव्य मंदिर गुजरात के साबरकाँठा जिले में प्रसिद्ध है। मंदिर में वेदी आदि की रचना सोनगढ़ के मंदिर से मिलती-जुलती है। मूलनायक आदिनाथ भगवान हैं और ऊपर की मंजिल में महावीर भगवान की



सुन्दर खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। नीचे तलघर में त्यागियों के रहने का शान्त स्थान है। प्रवचन के लिये सुन्दर मण्डप बनाया गया था और गुरुदेव ने प्रवचन में 'नमः समयसाराय' का भावार्थ समझाया था। रात्रि को जिन मंदिर में भक्ति हुई थी और दूसरे दिन समूह पूजा का कार्यक्रम रखा था। प्रवचन के पश्चात् गुरुदेव को अभिनन्दन-पत्र दिया गया था। तलोद से प्रस्थान करके मार्ग में उजेडिया जिन मंदिर के दर्शन करते हुए गुरुदेव रखियाल पधारे।

### रखियाल ( वैशाख शुक्ला ५ )

स्वागत के पश्चात् गुरुदेव ने नियमसार के आठवें कलश पर मंगल-प्रवचन किया था। वहाँ स्टेशन के निकट एक गृह चैत्यालय में आदिनाथ भगवान विराजमान हैं। ग्राम में दूसरा भी एक जिन मंदिर है। दोपहर को प्रवचन और रात्रि को जिनेन्द्र भक्ति का कार्यक्रम था। भक्ति के पश्चात् यात्री देहगाम पहुँच गये थे।

### देहगाम ( वैशाख शुक्ला ६ )

गुरुदेव के पधारते ही जैन समाज ने उल्लास पूर्ण स्वागत किया। स्वागत में तथा प्रवचन में लोगों ने काफी संख्या में भाग लिया था। श्री केशुभाई के पुत्र ने सपत्नीक ब्रह्मचर्य-प्रतिज्ञा अंगीकार की थी। रात्रि को सीमंधर भगवान के सन्मुख भक्ति हुई थी; जिसमें देहगाम की बहिनों ने श्री रासपूर्वक मुरली के भजन गाकर भक्ति की थी। वहाँ के गृह चैत्यालय में सीमंधर भगवान की प्रतिमा विराजमान है और जिन मंदिर के लिये महावीर भगवान की प्रतिमाजी प्रतिष्ठित होकर इस समय तलोद के जिन मंदिर में विराजमान हैं। वहाँ के समाज में जिनमंदिर निर्माण की भावना है।

### कलोल ( वैशाख शुक्ला ६-७ )

दूसरी वैशाख शुक्ला ६ के दिन गुरुदेव का आगमन होते ही कलोल के जैन समाज ने भव्य स्वागत किया था। कलोल में सुन्दर जिन मंदिर है; उसके भोंयरे में भी प्राचीन जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मंदिर के ऊपरी भाग में इस समय सेठ जीवनलाल बखारिया के वंडे में प्रगट हुए मुनिसुव्रतनाथ विराजमान हैं। गुरुदेव के प्रवचन के उपरान्त रात्रि को आत्मसिद्धि की स्वाध्याय और दूसरे दिन मंदिर में समूह पूजन हुई थी। वहाँ से दोपहर को गुरुदेव अहमदाबाद पधारे थे।

### अहमदाबाद

सायंकाल तीन से चार बजे तक प्रेमा भाई हॉल में गुरुदेव का प्रवचन हुआ था और रात्रि को तत्त्वचर्चा के समय गुरुदेव ने भावपूर्वक अनेक तीर्थों की यात्रा के संस्मरण सुनाये थे। रात्रि को

सोनगढ़ के अधिकांश यात्री अहमदाबाद से रवाना होकर वैशाख शुक्ला ९ वीं के प्रातःकाल सोनगढ़ पहुँच गये थे। शेष भक्तों के साथ गुरुदेव वैशाख शुक्ला ९ वीं के दिन अहमदाबाद से पोलारपुर पधारे थे और वहाँ दोपहर को प्रवचन हुआ था। सायंकाल गुरुदेव सीहोर आकर ठहर गये थे।

### सोनगढ़ निवासी मुमुक्षुगण के साथ

पूज्य बेन श्री बेन का सोनगढ़ में आगमन होते ही सोनगढ़ की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक पुष्पहार आदि से उनका स्वागत किया और भक्तों ने यात्रा के उल्लास में आभार प्रदर्शित किया, भक्ति के गीत गाते-गाते पूज्य बेन श्री बेन विदेहीनाथ सीमंधर भगवान के दर्शनार्थ मंदिर में पहुँची। दूर-दूर से दिव्य प्रकाश में जगमगाती हुई सीमंधर प्रभु की प्रतिमा को देखकर क्षणभर तो वे स्तब्ध रह गई.... अत्यन्त भक्ति, आश्चर्य तथा प्रमोद से भगवान को निहारती ही रहीं.... फिर हृदय खोलकर आनन्द भरी भक्ति की—मानों सम्पूर्ण यात्राकाल में संचित अपार हर्ष को सीमंधरनाथ के समक्ष एक साथ व्यक्त कर रही हों!—

**आनन्द मंगल आज हमारे आनन्द मंगल आज जी,  
सीमंधर प्रभुना दर्शन करतां आनन्द मंगल आज जी ॥**

—इत्यादि अनेक प्रकार से भक्ति की थी। अनेक तीर्थों की यात्रा के पश्चात् आज बहुत दिनों में सीमंधरनाथ के दर्शन होने से सबके हृदय में भक्ति का उल्लास था।

### भावनगर( वैशाख शुक्ला १० )

सीहोर से प्रस्थान करके पूज्य गुरुदेव भावनगर पधारे और जैन समाज ने भव्य स्वागत किया... गुरुदेव के आगमन के उपलक्ष में नगर को भलीभाँति सजाया गया था। हजारों जनता ने प्रेमपूर्वक गुरुदेव का प्रवचन सुना। गुरुदेव २९ वर्ष बाद भावनगर पधारे थे, इसलिये वहाँ भक्तों के हृदय में अनेक भूतकालीन स्मृतियाँ जागृत हो रही थीं। दूसरे दिन रात्रि को गुरुदेव भगवानलाल सेठ के बँगले पर पधारे थे और वहाँ जिनेन्द्र भक्ति हुई थी।

जिनमंदिर में चन्द्रप्रभ भगवान की खड्गासन प्रतिमा के दर्शनों से भक्तों को हर्ष हो रहा था। तीसरे दिन (वैशाख शुक्ला १२) प्रातःकाल गुरुदेव लगभग तीन सौ भक्तों सहित भावनगर के निकट घोघा स्थित जिनमंदिर के दर्शनार्थ पधारे थे। प्राचीनकाल में घोघा सौराष्ट्र का वैभवशाली बन्दरगाह था; इससमय वहाँ दो प्राचीन दिगम्बर जिनमंदिर तथा अनेक प्राचीन जिनबिम्ब हैं। उनमें



मूलनायक आदिनाथस्वामी की प्रतिमा अति प्राचीन है। स्फटिक की प्रतिमाएँ भी मंदिर में विराजमान हैं।

दर्शन के पश्चात् आँगन में पार्श्वनाथ भगवान को विराजमान करके समूह पूजन हुई थी... और फिर भक्ति का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ था। सर्व प्रथम गुरुदेव ने उपशमभाव पूर्वक उपशमरस झरते हुए पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन गवाया था... स्तवन गवाते हुए गुरुदेव ने कहा कि अनेक तीर्थों की यात्रा हुई... आज मंगलवार के दिन यात्रा का मंगल किया। तत्पश्चात् पूज्य बेन श्री बेन ने भक्ति कराई थी, जिसमें समस्त देश के तीर्थों का स्मरण किया था—

**“भारतभूमिना वासी जिनने वंदुं वार हजार.....”**

फिर घोघा में चाय-नाश्ता करके यात्री भावनगर लौट आये और दूसरे दिन भावनगर से सोनगढ़ की ओर प्रस्थान किया।

### **पूज्य गुरुदेव का सोनगढ़ आगमन ( वैशाख शुक्ला-१३ )**

आज सोनगढ़ को विभिन्न प्रकार से सजाया गया था... आम्र वृक्ष अत्यन्त प्रफुल्लित लग रहे थे, मानों हाथों में आम्रफल लेकर गुरुदेव का स्वागत कर रहे हों! स्वाध्याय-मंदिर के वृक्ष तो शत-शत दीपकों की ज्योति से गुरुदेव का स्वागत कर रहे थे... द्वारों तथा तोरण-पताकाओं से नगर के मार्ग सुशोभित थे... अनेक ग्रामों के सैकड़ों भक्तजन तथा सुवर्णपुरी के नगरजन गुरुदेव का स्वागत करने के लिये आतुर हो रहे थे... बेण्डबाजे मंगलनाद कर-करके मानों ‘मंगलवर्द्धिनी’ को बुला रहे थे!

इधर गुरुदेव की ‘मंगलवर्द्धिनी’ तेजी से सोनगढ़ की ओर दौड़ रही थी... गुरुदेव के अंतर में सीमंधरनाथ से भेंट करने की ऊर्मियाँ उठ रही थीं और दूर-दूर से सोनगढ़ के जिनधामों को निहार रहे थे... कुछ ही देर बाद ‘मंगलवर्द्धिनी’ सोनगढ़ आ पहुँची और सा... रे... ग... म के मधुर स्वर द्वारा ज्यों ही गुरुदेव के आगमन की सूचना दी कि तुरन्त सैकड़ों भक्तजनों ने जय-जयकार से आकाश गुंजा दिया और उत्साहपूर्वक गुरुदेव का स्वागत किया।

स्वागत के पश्चात् गुरुदेव सीमंधरनाथ के दरबार में पहुँचे और भगवान के दर्शन करते ही अन्तर में भक्ति का स्रोता बहने लगा... अत्यन्त नम्रभाव से नमन करके प्रभु की मुद्रा को निहारते रहे और फिर अर्घ्य चढ़ाकर भगवान की पूजा की। पूजा के पश्चात् स्वाध्यायमंदिर में आये और वहाँ

भावपूर्वक अनेक तीर्थ धामों का स्मरण करके शांतरस से परिपूर्ण मंगल-प्रवचन किया। दोपहर को प्रवचन में 'समयसार' की वचनिका प्रारम्भ हुई... तत्पश्चात् जिनमंदिर में भक्ति कराते हुए पूज्य बेन श्री बेन ने तीर्थयात्रा महोत्सव की पूर्णता का एक भाववाही स्तवन गवाया.... भक्ति के पश्चात् जिनेन्द्रदेव तथा संत-मुनियों के जय-जयकार पूर्वक वह मंगल यात्रा समाप्त हुई... गुरुदेव के साथ भारत के अनेक तीर्थधामों की वह महा मंगलवर्द्धिनी यात्रा भव्य जीवों के लिये मंगलवृद्धि का कारण हो !

—यहाँ 'पूज्य श्री कानजी स्वामी दि० जैन तीर्थयात्रा संघ' का वर्णन समाप्त हुआ।



\*\*\*\*\*

भारत के महान तीर्थों की उल्लासभरी यात्रा सानन्द समाप्त हुई—उसके लिये पूज्य गुरुदेव का हमारे ऊपर महान उपकार है.... संसार से पार होने का सच्चा तीर्थ वे हमें समझा रहे हैं... इसप्रकार सम्यक्तीर्थ की अपूर्व यात्रा कराके मुक्तिपुरी सिद्धिधाम की ओर ले जानेवाले परम पूज्य गुरुदेव के पुनीत चरणों में भक्तिभाव पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

— ब्रह्मचारी हरिलाल जैन

\*\*\*\*\*





## वीतराग की वाणी



## अमृत रस का पान कराती है

आत्मा में अपने धर्म का या मोक्ष का साधन होने की शक्ति है। निमित्त और राग यदि धर्म के सच्चे साधक हों, तो क्या आत्मा में अपने धर्म का साधन होने की शक्ति नहीं है? यदि अपने में शक्ति न हो तो दूसरा क्या करेगा? और यदि अपने में ही साधन होने की शक्ति है तो दूसरे साधनों की अपेक्षा कहाँ रहती है? किन्तु जीव की पराधीनदृष्टि नहीं छूटती, इसलिये मानता है कि कुछ निमित्त या कुछ राग मेरे लिये धर्म के साधन हो जायेंगे; किन्तु अन्तर्स्वभावोन्मुख होकर अपने आत्मा को साधन नहीं बनाता। भगवान की वाणी तो ऐसा बतलाती है कि अहो जीवो! पर से परमवैराग्य करके चैतन्यस्वरूप की ओर उन्मुख होओ।

जो पर से-राग से किञ्चित् भी लाभ होना मानता है, उसे परम वैराग्य नहीं होता। अहो! जिनवाणी माता तो चैतन्य के निर्विकल्परस का पान करानेवाली है; निर्विकल्प अमृत का पान परोन्मुखता से नहीं होता किन्तु स्वोन्मुखता से ही होता है; इसलिये स्वभावोन्मुख होना ही जिनवाणी का उपदेश है।

अहा, भगवान की वाणी, भव्य जीवों को अमृतपान कराके भव-समुद्र से तारनेवाली है। भव्य जीव अपने कर्णरूपी खोबे भर-भर कर उसका पान करते हैं। जिनवाणी तो पर से अत्यन्त विरक्त होकर स्वरूपसन्मुख होना बतलाती है; और इसप्रकार स्वरूपसन्मुख होते ही भव्यजीवों को निर्विकल्प अनुभवरस का स्वाद आता है; इसलिये ऐसा कहा जाता है कि जिनवाणी ने ही अमृत का पान कराया। श्रीमद् राजचन्द्र कहते हैं कि—

**“वचनामृत वीतरागनां परम शांतरसमूल,  
औषध जे भवरोगनां कायरने प्रतिकूल॥”**

भगवान सर्वज्ञ और संतों को अपने आत्मा में परम शांत चैतन्यरस का वेदन हुआ है और उनकी वाणी भी परमशांतरस का मूल है। उस वीतरागीवाणी को यथार्थरूप से झेलने पर भव्य जीवों के आत्मा में परमशांतरस का वेदन हुए बिना नहीं रहता। वीतराग की वाणी वीतरागता करानेवाली है; कहीं भी राग का पोषण करे, वह वीतराग की वाणी नहीं है। मुक्त पुरुषों की वाणी तो मुक्ति की ओर ही ले जानेवाली है, वीतरागी मोक्षमार्ग का ही आदेश देनेवाली है। जो मोक्षार्थी-

पुरुषार्थी जीव हैं, वे तो ऐसी वीतरागी वाणी कानों में पड़ते ही वीतरागी पुरुषार्थ से उछल पड़ते हैं कि अहा! यह वाणी! ऐसी मनोहर अपूर्व वाणी! ऐसा अचिन्त्यस्वभाव दर्शानेवाली वाणी! जिस जीव के अंतर में ऐसा पुरुषार्थ नहीं है और कायरता से राग को ही साधन मानता है, उस कायर को वीतराग की वाणी प्रतिकूल है। जिस प्रकार मिसरी मीठी-मधुर होने पर भी वह गधे को प्रतिकूल होती है, उसी प्रकार वीतराग की वाणी मीठी-मधुर, परम शांतरस की देनेवाली होने पर भी विपरीतदृष्टिवाले कायर को प्रतिकूल होती है, क्योंकि उसे राग की रुचि है; वीतरागी तात्पर्यवाली वाणी उसे कैसे रुच सकती है? वीतराग भगवान की वाणी तो जीव को अंतर्मुख ले जाकर चैतन्य के परम शांत अमृतरस का पान कराती है और पुरुषार्थी भव्य जीव ही उसे यथार्थरूप से झेल सकता है। (नियमसार गा. ८ के प्रवचन से)



\*\*\*\*\*

अनेक तीर्थों की महा मंगल यात्रा करके वैशाख शुक्ला त्रयोदशी के दिन गुरुदेव सोनगढ़ पधारे। वहाँ प्रवचन में श्री समयसार प्रारम्भ करते हुए मंगलाचरण में श्री कुन्दकुन्द स्वामी का स्मरण करके गुरुदेव ने भावपूर्वक कहा कि—यात्रा में मद्रास से ८० मील दूर 'पोन्नूर हिल' गये थे; वह कुन्दकुन्दाचार्य देव की पवित्र भूमि है; वहाँ रहकर वे ध्यान करते थे और वहीं से विदेहक्षेत्र में सीमंधर भगवान के पास गये थे... वहाँ से लौटकर उन्होंने इन समयसारादि शास्त्रों की रचना की है।

पोन्नूर पर्वत अत्यन्त रमणीक है.... एकान्त शांत धाम है... वहाँ ध्यान लगाने के लिये दो गुफाएँ हैं... चंपा वृक्ष के नीचे कुन्दकुन्दाचार्यदेव के प्राचीन चरण कमल हैं... देखो, आज मंगलाचरण में कुन्दकुन्दाचार्यदेव की तपोभूमि पोन्नूर तीर्थ का स्मरण होता है। वे विदेहक्षेत्र तो गये ही थे, किन्तु पोन्नूर से गये थे—यह बात इस यात्रा में नई जानने को मिली

यात्रा में अनेक तीर्थों के दर्शन किये.... किन्तु बाहुबलि (गोमटेश्वर) की जीवन्त मुद्रा तो अद्भुत है!... उसके अंग-अंग से मानों पुण्य और पवित्रता झर रहे हों!... नेत्र ऐसे झुके हैं जैसे पवित्रता का पिण्ड बनकर अक्रिय ज्ञानानन्द का ध्यान धर रहे हों;—इसप्रकार उनकी भाववाही मुद्रा देखते ही बनती है... उसे देख-देखकर तृप्ति नहीं होती... आज इस दुनियाँ में वह अद्वितीय है।

\*\*\*\*\*



\*\*\*\*\*

## यात्रा के मीठे संस्मरण



[ पोन्नूर तीर्थधाम में श्री कुन्दकुन्द भगवान के चरण कमलों की  
पूजा-भक्ति के दृश्य ) ]

\*\*\*\*\*

## पुरुषार्थी के उद्गार

किसी निर्धन मनुष्य को कोई बड़ा राज्य मिलने का प्रसंग उपस्थित हो जाये, और वहाँ वह कहे कि 'अरे, हम तो गरीब हैं, हममें राज्य लेने या राजा होने की पात्रता कहाँ से हो सकती है?'—तो वह पुण्यहीन है। जो पुण्यवान है, वह तो तुरन्त स्वीकार करता है कि हम राजा होने के पात्र हैं; हम अपनी शक्ति से राज्य का संचालन करेंगे। उसीप्रकार यहाँ निर्धन अर्थात् अज्ञानी जीव को जब आचार्यदेव उसका चैतन्य राज्य मिलने की बात सुनाते हैं कि—'अरे जीव! तुझमें केवलज्ञान का महान पद लेने की शक्ति है; ज्ञानसाम्राज्य को प्राप्त करके उसे संभालने की सामर्थ्य है।' वहाँ जो ऐसा कहता है कि 'अरे! हम तो अज्ञानी, पाप में डूबे हुए हैं; हम में केवलज्ञान प्राप्त करने या परमात्मा होने की पात्रता कैसे हो सकती है?'—तो वह जीव पुरुषार्थ हीन है; और जो पुरुषार्थी है—आत्मा का उल्लासी है, वह तो ऐसी बात सुनकर तुरन्त स्वीकार करता है कि 'अहो! हमारा आत्मा केवलज्ञान लेने की पात्रता वाला है; हमारी पर्याय में केवलज्ञान साम्राज्य संभालने की शक्ति है; हम अपनी शक्ति से केवलज्ञान प्राप्त करेंगे!'—इसप्रकार आत्मशक्ति का विश्वास करके उसमें लीनता द्वारा धर्मी जीव केवलज्ञान साम्राज्य प्राप्त करता है। समस्त जीवों में ऐसी शक्ति है; उसे जो स्वीकार करता है, वही तद्रूप परिणमित होता है।

**‘सर्व जीव छे सिद्धसम.... जे समजे ते थाय।’**

[—संप्रदान शक्ति के प्रवचन से]





## सच्चे सुख के लिये सीधा मार्ग ( -यथार्थ उपाय ) प्रकाशनेवाले तत्त्वज्ञान के लिये सुरुचिपूर्ण ग्रन्थ

### १. सम्यग्दर्शन—( -दूसरी आवृत्ति )

धर्म का मूल सम्यग्दर्शन है। जो अपना असली स्वरूप-स्वाधीनसुख और उसका सच्चा उपाय समझने में स्वच्छ दर्पण समान है, इस बात को अच्छे ढंग से शास्त्राधार सहित बताया है, जैन धर्म में ही सच्चा विश्व दर्शन क्यों है। सर्वज्ञ वीतराग कथित तत्त्वार्थों को वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध करके स्वतंत्र वस्तुस्वभाव समझने की अनेक बात स्पष्ट करने में आई है। आद्योपांत पढ़े बिना उसका महत्व ख्याल में नहीं आता। पृष्ठ सं० २६६ मूल्य १.६३।

### २. लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—

जो गाइड है—जैन तत्त्वज्ञान में सुगम शैली द्वारा प्रवेश पाने के लिये शास्त्राधार सहित सुगम और प्रयोजनभूत प्रश्नोत्तर हैं, सभी में प्रचार होने योग्य है। थोक लेने पर कमीशन देंगे। पृष्ठ संख्या १०५ मूल्य ०.१९ नये पैसे।

### ३. श्री जैन तीर्थ पूजा पाठ संग्रह—

जो भक्ति पूजा और तीर्थयात्रा के समय जिनेन्द्रों की बड़ी-बड़ी पूजा के लिये उपयोगी पुस्तक है। जिसमें भारतवर्ष के प्रायः सब जैन तीर्थक्षेत्र तथा अतिशय क्षेत्रों में पूजा के समय जो प्राचीन पूजायें चल रही हैं, वे हैं, और यात्रियों के लिये तीर्थक्षेत्रों के विषय में प्रयोजनभूत जानकारी और कहाँ से कहाँ जाना-आना इत्यादि वर्णन तथा क्षेत्रों का परिचय होने से पुस्तक अति उपयोगी है। बहुत अच्छे कागज पर सुन्दर ढंग से बड़े टाइप में छपी है, बढ़िया कपड़े की जिल्द पत्र सं० ३०० मूल्य १.४५। १० पुस्तक एक साथ लेने पर कमीशन देंगे।

### ४. जैन सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला भाग १-२-३

जिसमें सर्वोत्तम शैली से शास्त्राधार सहित तत्त्वार्थों के विषय में ऐसा समाधान दिया है कि शास्त्रों का अर्थ नहीं समझनेवालों का भी सच्चा निःशंक समाधान हो सकता है और सभी को

उपयोग में आने योग्य है। पृ० सं० तीनों भाग की ४००, मूल्य प्रत्येक का ०.५६।

#### ५. ज्ञानस्वभाव और ज्ञेयस्वभाव—

जो जैनधर्म का महत्वपूर्ण तात्त्विक और प्रयोजनभूत ग्रन्थ है। जो जिज्ञासुओं के लिये सर्व समाधानरूप अपूर्व वस्तु स्वभाव के ज्ञानमय तत्त्वदृष्टि प्रगट करनेवाली महान चीज है। इसके मुख्य विषय—

१- क्रमबद्धपर्याय के स्वरूप का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण तथा उनमें दोष कल्पना का निराकरण है।

२- सम्यक् अनेकान्तगर्भित सम्यक् नियतवाद-जिसमें पुरुषार्थ, स्वभाव, काल, नियति और कर्म - ये पंच समवाय और क्रमबद्ध के निर्णय में स्वसन्मुख होने का सच्चा पुरुषार्थ तथा अनेकान्त है।

३- अनेकान्त, निमित्त-उपादान, निश्चय-व्यवहार।

४- द्रव्य-पर्याय संबंधी अनेकान्त।

५- अनन्त पुरुषार्थ।

६- वस्तुविज्ञान अंक, जिसमें श्री प्रवचनसारजी गाथा ९९ के ऊपर पू० श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रवचनों का सार है।

७- आत्मा कौन है और कैसे प्राप्त हो—इस विषय में प्रवचनसार शास्त्र में ४७ नयों द्वारा आत्मद्रव्य का वर्णन है, उस पर खास प्रवचनों का सार-[ जिसमें नियतनय, और अनियतनय, कालनय, अकालनय से वर्णन है। बढिया जिल्द, सुन्दर कागज व आकर्षक बढिया टाइप में उत्तम छपाई है, पत्र सं० ४०० मूल्य २-५० नये पैसे। ५० पुस्तक लेने पर १० टका के हिसाब से कमीशन देंगे।]





## सर्व जीव हैं ज्ञानमय

‘सर्व जीव हैं ज्ञानमय’—अहा, मेरा आत्मा ज्ञानमय है और जगत के समस्त जीव ज्ञानमय हैं। ऐसे ज्ञानस्वरूप आत्मा की भावना ही समभावरूप सामायिक है और वही मोक्षमार्ग है। राग से जो लाभ माने, उसने जीव को ज्ञानमय नहीं जाना किन्तु रागमय माना है; तथा दूसरे जीवों को भी वह वैसा ही मानता है; उसके समभाव नहीं किन्तु विषमभाव है अर्थात् मोहभाव है। जिसने अन्तर्मुख होकर अपने आत्मा को ज्ञानमय जाना, उसने जगत के समस्त जीवों को भी परमार्थतः वैसा ही जाना है और उसके मोह का नाश होकर सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र्यरूप समभाव होता है।

[— प्रवचन से]



नया प्रकाशन

## मोक्षशास्त्र ( तत्त्वार्थसूत्रजी ) दूसरी आवृत्ति

छपकर तैयार हो गया है। तत्त्वज्ञान के जिज्ञासुओं द्वारा उसकी बहुत समय से जोरों से माँग है, जिसमें सर्वज्ञ वीतराग कथित तत्त्वार्थों का और सम्यग्दर्शन आदि का निरूपण सुगम और स्पष्ट शैली से किया गया है, सम्यक् अनेकान्तपूर्वक नयार्थ भी दिये हैं और जिज्ञासुओं के समझने के लिये विस्तृत प्रश्नोत्तर भी नय-प्रमाण द्वारा-सुसंगत शास्त्राधार सहित दिये गये हैं। अच्छी तरह संशोधित और कुछ प्रकरण में प्रयोजनभूत विवेचन बढ़ाया भी है। शास्त्र महत्वपूर्ण होने से तत्त्व प्रेमियों को यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ने योग्य है। पत्र सं० ९०० करीब, मूल्य लागत मात्र ५), पोस्टेज आदि अलग। पचास ग्रन्थ मँगानेवालों को दस टका कमीशन; सौ पुस्तक में बीस टीका कमीशन और १० पुस्तक से कम मँगाने पर कमीशन नहीं देंगे।

पता:—श्री दि० जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट  
सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

## जिज्ञासुओं के लिये स्वर्णावसर

आसोज सुद १५ तक के लिये कुछ ग्रन्थों के मूल्य में कमी

### १ — लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका

जो तत्त्वज्ञान में प्रवेश पाने के लिये गाइड ( -मार्ग दर्शिका ) है, जैन तत्त्वज्ञान में सुगय शैली द्वारा प्रवेश पाने के लिये शास्त्राधार सहित रोचक, स्पष्ट और प्रयोजनभूत प्रश्नोत्तर है, जैन-जैनेतर सभी में प्रचार होने योग्य है मूल्य -०-१९ नये पैसे। एकसाथ २५ बुक में १२ ॥) टका कमीशन, और १०० बुक पर २५) टका कमीशन देंगे।

### २ — श्री समयसार प्रवचन भाग ३, हिन्दी - ४ ॥ ) वाला अर्ध मूल्य में

### ३ — भेद विज्ञानसार " २ ) " " "

### ४ — श्री जैन तीर्थक्षेत्र पूजा पाठ संग्रह ( बड़ा )

जो भक्तिपूजा और तीर्थयात्रा के समय जिनेन्द्रों की बड़ी-बड़ी पूजा के लिये तथा प्रत्येक जिनमंदिर के लिये उपयोगी है। जिसमें प्रायः देशभर के सब जैन तीर्थक्षेत्र तथा अतिशय क्षेत्रों में जो प्राचीन पूजायें चल रही हैं वे हैं। और यात्रियों के लिये तीर्थक्षेत्रों के विषय में प्रयोजनभूत जानकारी, कहाँ से कहाँ कैसे जाना इत्यादि वर्णन है। बहुत अच्छे कागज पर सुन्दर ढंग से बड़े टाइप में छपी है, बढ़िया कपड़े की जल्द पत्र सं० ३०० मूल्य १-४५- पोस्टेजादि अलग। १० पुस्तक एक साथ लेने पर २५) प्रतिशत कमीशन, और एक ग्रन्थ में दस टका कमीशन।





परमपूज्य श्री कानजी स्वामी के आध्यात्मिक वचनों का अपूर्व  
लाभ लेने के लिये निम्नोक्त पुस्तकों का—

## अवश्य स्वाध्याय करें

पंचास्तिकाय	४ ॥)	ज्ञानस्वभाव ज्ञेयस्वभाव	२ ॥)
मूल में भूल	॥१)	सम्यग्दर्शन	१ ॥=
श्री मुक्तिमार्ग	॥=)	द्वादशानुप्रेक्षा ( स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षा )	२ )
श्री अनुभवप्रकाश	॥)	जैन तीर्थ पूजा पाठ संग्रह	
श्री पंचमेरु आदि पूजासंग्रह	॥१)	कपड़े की जिल्द	१ ॥=)
समयसार प्रवचन भाग २	५ १)	भेदविज्ञानसार	२ )
समयसार प्रवचन भाग ३	४ ॥)	अध्यात्मपाठसंग्रह	५ )
प्रवचनसार	५ )	समयसार पद्यानुवाद	१ )
अष्टपाहुड़	३ )	निमित्तनैमित्तिक संबंध क्या है ?	= )
चिद्विलास	१=)	स्तोत्रत्रयी	॥)
आत्मावलोकन	१ )	लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका	= )
मोक्षमार्ग-प्रकाशक की किरणें प्र०	१ ॥=)	'आत्मधर्म मासिक' लवाजम-	३ )
द्वितीय भाग	२ )	आत्मधर्म फाइलें १-३-५-६-	
जैन सिद्धांत प्रश्नोत्तरमाला प्र०	॥-)	७-८-१०-११-१२-१३ वर्ष	३ ॥१)
द्वितीय भाग	॥-)	शासन प्रभाव	= )
तृतीय भाग	॥-)		
जैन बालपोथी	१)		

[ डाकव्यय अतिरिक्त ]

मिलने का पता—  
श्री जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट  
सोनगढ़ ( सौराष्ट्र )

मुद्रक—नेमीचन्द बाकलीवाल, कमल प्रिन्टर्स, मदनगंज ( किशनगढ़ )  
प्रकाशक—श्री जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के लिये—नेमीचन्द बाकलीवाल ।